Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ اَذًى ۗ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ ۝

(सूरः अल् बकरः : 164)

अनुवाद : नेक बात कहना और माफ़ करना उस सदक़े से बेहतर है जिसके बाद नुक़्सान हो। और अल्लाह अत्यन्त दयावान (और) सहनशील है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-18

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

13 शवाल 1444 हिज्री कमरी, 04 हिजरत 1402 हिज्री शम्सी, 04 मई 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

दोनों ईदों की रातों में तहज्जुद पढ़ने वाले का हृदय हमेशा के लिए ज़िंदा कर दिया जाएगा

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो कोई भी दो ईद की रातों में केवल अल्लाह की इबादत करता है, उसका दिल हमेशा के लिए फिर से जीवित हो जाएगा और उसका दिल तब भी नहीं मरेगा जब दुनिया के सभी दिल मर जाएंगे। (सुन्न इब्ने माजा, किताब अल्-सियाम, अध्याय باب فیمن قام فی لیلتی العیدین, हदीस 1782)

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया, "खुदा की महानता का वर्णन करके अपनी ईदों को सजाओ।"

(کنز العمال جزء8 صفحہ546 باب صلاۃ عید الفطر حدیث24094 مؤسسۃ الرسالۃ بیروت1985ء)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, तकबीर और तहलील और अल्लाह की प्रशंसा करते हुए खुदा की बुज़ुर्गी प्रकट करते हुए अपनी ईदों को सुशोभित करो।"

(کنز العمال جزء8 صفحہ546 باب صلاۃ عید الفطر حدیث24095 مؤسسۃ الرسالۃ بیروت1985ء ماخوذ از خطبہ جمعہ حضور انور ایدہ اللہ تعالیٰ 14 نومبر 2004)

★ ★ ★

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं

मैं दोस्तों से यह कहना चाहता हूँ कि हमारी ईद दरअसल वही हो सकती है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ईद हो। अगर हम तो ईद मनाएं लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम न मनाएं तो हमारी ईद बल्कुल ईद नहीं कहला सकती। बल्कि वह मातम होगा जैसे किसी घर में कोई लाश पड़ी हो उनका कोई बड़ा आदमी फ़ौत हो गया हो तो लाख ईद का चांद निकले उनके लिए ईद का दिन मातम का ही दिन होगा। इसी तरह एक मुस्लमान के लिए चाहे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर तेराह सौ साल से ज़्यादा अरसा गुज़र चुका है अगर उस की ईद में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शामिल नहीं और अगर वह इस ज़ाहिरी ईद पर मुतमइन हो जाता है तो उस की ईद किसी काम की नहीं। बे-शक उस दिन ख़ुदा तआला ने हमें ख़ुश होने का हुक्म दिया है और हम ख़ुशी मनाने पर मजबूर होते हैं लेकिन फिर भी हमारे दिलों को चाहिए कि वह रोते रहें कि अभी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम की ईद नहीं आई। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम की ईद सेवय्यां खाने से नहीं आती न शीर-ख़ुरमा खाने से आती है बल्कि उनकी ईद क़ुरआन और इस्लाम के फैलने से आती है। अगर क़ुरआन और इस्लाम फैल जाए तो हमारी ईद में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी शामिल हो जाएंगे और आप ख़ुश होंगे कि अगरचे मुझे फ़ौत हुए तेराह सौ साल से ज़ायद समय गुज़र चुका है लेकिन जिस मिशन को लेकर मैं दुनिया में आया था अभी तक मेरी उम्मत ने उसे क़ायम रखा

शेष पृष्ठ 12 पर

इस्लाम में दो ईदें होती हैं, इन दो दिनों को बड़ी खुशी का दिन भी माना जाता है और इनमें अद्भुत बरकतें रखी गई हैं।

लेकिन एक दिन इन सब से ज्यादा शुभ और सुखदायी होता है, लेकिन दुर्भाग्य से लोग न तो उस दिन का इंतेजार करते हैं और न ही उसकी तलाश करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

याद रखें कि इस्लाम में अल्लाह तआला ने ऐसे दिन निर्धारित किए हैं कि वे दिन बड़े आनंद के दिन माने जाते हैं और अल्लाह तआला ने उनमें अद्भुत बरकतें रखी हैं। उनमें से एक दिन शुक्रवार है। यह दिन भी बहुत बरकत वाला है। लिखा है कि अल्लाह तआला ने हजरत आदम को जुमा के दिन पैदा किया और उस दिन उनकी तौबा कुबूल हुई और इस दिन के लिए बहुत सी नेमतें और खूबियां गिनाई जाती हैं। इसी तरह इस्लाम में भी दो ईदें हैं। इन दोनों दिनों को बड़ी खुशी और अजीब बरकत का दिन भी माना गया है उनमें भी रखा गया है। लेकिन याद रखें कि यह दिन निश्चित रूप से अपने-अपने स्थान पर धन्य और खुशहाल दिन हैं, लेकिन एक दिन उन सभी से अधिक धन्य और सुखी है। लेकिन दुख की बात यह है कि लोग न तो इस दिन का इंतेजार करते हैं और न ही इसकी तलाश, अन्यथा यदि लोग इसकी बरकात और गुणों के बारे में जानते होते या वे उसकी परवाह करते, तो वास्तव में वह दिन उनके लिए बहुत ही शुभ होता और यह सौभाग्य का दिन साबित होता और लोग इसे गनीमत समझते वह दिन कौन सा दिन है जो शुक्रवार और ईद की तुलना बेहतर और अधिक धन्य है? मैं तुम से कहता हूँ कि वह दिन मनुष्य की तौबा का दिन है जो इन सब से उत्तम और हर ईद से उत्तम है। क्यों? क्योंकि इस दिन वह बुरा आमाल नामा जो इंसान को जहन्नम के करीब करता जाता है और अंदर ही अंदर उसे खुदा के प्रकोप में ला रहा होता है धो दिया जाता हैं और उसके गुनाह माफ कर दिए जाते हैं, असल में इंसान के लिए इससे बढ़कर खुशी और ईद का दिन क्या होगा। जो उसे अनन्त नरक और भगवान के अनन्त क्रोध से बचाले। तौबा करने वाला गुनाहगार जो पहले अल्लाह से दूर और उसके दंड का निशान बना हुआ था अब उसके फ़ज़ल से उसके करीब होता है और जहन्नम और अज़ाब से दूर किया जाता है। जेसे कि अल्लाह ने फ़रमाया ۔ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ

(ملفوظات جلد4 صفحہ114 مطبوعہ قادیان2003)

★ ★ ★

एक मुसलमान की ईद में यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शामिल न हों तो उसकी ईद किसी काम की नहीं

निसन्देह, सर्वशक्तिमान खुदा ने हमें खुश रहने का आदेश दिया है और हम जश्न मनाने के लिए मजबूर होते हैं

लेकिन फिर भी, हमारे दिलों को चाहिए कि वे रोते रहें कि अभी मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस्लाम की ईद नहीं आई, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्ल और इस्लाम की ईद क़ुरआन और इस्लाम के फैलने से आतीहै।

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

अगर हम ने रमज़ान का हक़ीक़ी फ़ैज़ उठाना है तो हमें इबादतों के साथ क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत और इस पर ग़ौर की तरफ़ भी विशेष ध्यान देना चाहिए

हमें भी इस महीने में विशेषता क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने सुनने, उसकी तफ़सीर पढ़ने सुनने की तरफ़ विशेष तवज्जा देनी चाहिए। एम. टी. ए. पर भी इस के प्रोग्राम आते हैं, दरस भी आता है इस की तरफ़ तवज्जा दें

जब हम क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत के साथ उसका अनुवाद और इस की तफ़सीर पढ़ेंगे और सुनेंगे तब ही हम इन अहकामात की एहमियत को समझ सकते हैं जो इस में वर्णन हुए हैं उन्हें अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बना सकते हैं, अपनी ज़िंदगी को क़ुरआनी तालीम के मुताबिक़ ढाल सकते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़ब करने वाले हो सकते हैं

क़ुरआन शरीफ़ मुस्तक़िल और कयामत तक रहने वाली शरीयत है

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिम्मत-ओ-इस्तेदाद और अज़म का दायरा चूँकि बहुत ही वसीअ था इस लिए आपको जो कलाम मिला वह भी इस पाया और रुत्बा का है कि दूसरा कोई शख़्स इस हिम्मत और हौसला का कभी पैदा न होगा।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

क़ुरआन शरीफ़ समस्त ज्ञानों का स्रोत है

क़ुरआन का प्रत्येक हुक्म उद्देश्यों और तर्कों से परिपूर्ण है

इस नज़र से हमें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना और समझना चाहिए और आज़ादी के नाम पर आजकल बच्चों और बड़ों के ज़हनों को भी जो ज़हर--आलूद किया जा रहा है इस से भी हम बच सकेंगे हम अहमदियों को प्रत्येक वक़त अपने जायज़े लेते रहना चाहिए कि हम किस हद तक क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की हक़ीक़त को समझते और इस पर अमल करने की कोशिश करते हैं या कर रहे हैं

रमज़ान में दुआओं कीतरफ़ भी तवज्जा दें

अल्लाह तआला प्रत्येक जगह प्रत्येक अहमदी को प्रत्येक उपद्रव से बचाए और अल्लाह तआला की नज़र में जो नाक़ाबिल-ए-इस्लाह हैं उनको इबरत का निशान बनाए ताकि दूसरे लोग अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल करने वाले बन सकें

दुनिया के लिए उमूमी तौर पर भी दुआ करें अल्लाह तआला जंग की आफ़त से दुनिया को बचाए

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में क़ुरआन करीम के फ़ज़ायल, मुक़ाम-ओ-मर्तबा और अज़मत का वर्णन

प्रत्येक अहमदी को प्रत्येक उपद्रव से बचाने और नाक़ाबिल-ए-इस्लाह लोगों को इबरत का निशान बनाने के लिए रमज़ानुल मुबारक में विशेष दुआ की तहरीक

मौलाना मुनव्वर अहमद ख़ुरशीद साहिब साबिक़ मुबल्लिग मग़रिबी अफ़्रीक़ा, श्रीमान इक़बाल अहमद मुनीर साहिब मुरब्बी सिलसिला पाकिस्तान और सय्यदा नुसरत जहां बेगम साहिबा कादियान की वफ़ात पर मरहूमीन का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 31 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
-اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ
-بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

आज कल हम रमज़ान के महीने से गुज़र रहे हैं। एक ऐसा महीना है जिसमें एक रुहानी माहौल बन जाता है और मोमिनों की जमाअत में यह माहौल बनना चाहिए। इस महीने में रोज़ों के साथ इबादतों की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा पैदा होती है और होनी चाहिए। क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने, सुनने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा पैदा है और

अगर रोज़ों का हक़ीक़ी फ़ैज़ उठाना है तो इबादतों के साथ क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने सुनने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा होनी चाहिए

और रमज़ान को तो क़ुरआन-ए-करीम के साथ विशेष संबंध है या क़ुरआन-ए--करीम को रमज़ान के साथ निसबत भी है। अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है कि شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ (अल्बकर: : 186) रमज़ान का महीना वह महीना है जिस में क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल किया गया है। वह क़ुरआन जो तमाम इन्सानों के लिए हिदायत बना कर भेजा गया है जो खुले दलायल अपने अंदर रखता है जो हिदायत

पैदा करते हैं और इलाही निशानात भी हैं।

बाअज़ प्रमाणित रिवायात यह भी कहती हैं कि चौबीसवें रमज़ान को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहली वह्यी हुई।

(सुंन अल्कुबरा लिल्बहीकी किताब अल् जिज़या भाग 9 पृष्ठ 317 हदीस 18649 प्रकाशन दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

(الاتقان فی علوم القرآن (مترجم) भाग प्रथम पृष्ठ 122 मक्तबतुल इल्मिया लाहौर)

इसी तरह प्रत्येक वर्ष आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जिबराईल अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-करीम का दौर रमज़ान में मुकम्मल किया करते थे और आख़िरी वर्ष में दो मर्तबा यह दौर मुकम्मल हुआ।

(सही अल्-बुख़ारी किताब फ़ज़ायलुल-क़ुरआन बाब كان جبريل يعرض القرآن على النبی ﷺ हदीस 4998)

तो बहरहाल क़ुरआन-ए-करीम की रमज़ान के हवाले से एक विशेष एहमीयत है अतः हमें भी इस महीने में विशेषता क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने सुनने, उस की तफ़सीर पढ़ने सुनने की तरफ़ विशेष तवज्जा देनी चाहिए। एम.टी.ए. पर भी इस के प्रोग्राम आते हैं, दरस भी आता है इस की तरफ़ भी ध्यान दें।

जब हम क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत के साथ उसका अनुवाद और इस की तफ़सीर पढ़ेंगे और सुनेगें तब ही हम इन अहकामात की एहमियत को समझ सकते हैं जो इस में वर्णन हुए हैं उन्हें अपनी ज़िंदगियों का हिस्सा बना सकते हैं,अपनी ज़िंदगी को क़ुरआनी तालीम के मुताबिक़ ढाल सकते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़ब करने वाले बन सकते हैं।

अतः अगर हमने रमज़ान का हक़ीक़ी फ़ैज़ पाना है तो हमें क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत और इस पर ग़ौर की तरफ़ भी विशेष तवज्जा देनी चाहिए।

मसाजिद में जहां दरसों का इंतेज़ाम है वहां दरस भी सुनना चाहिए। क़ुरआन-ए--करीम की एहमियत, उसके मुहासिन, उसके रोशन दलायल के बारे में इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ख़ूब खोल कर हमें बताया है। कुछ अर्से से ख़ुत्बात में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले से मैं मुख़्तलिफ़ इक़तेबासात में यह वर्णन कर रहा हूँ। अतः उन्हें बार-बार सुनने और पढ़ने और उन पर ग़ौर करने की ज़रूरत है ताकि सही तौर पर इस का फ़हम-ओ-इदराक हम अपने अंदर पैदा कर सकें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात के हवाले से आज भी मैं कुछ इक़तेबासात पेश करूँगा। इस बात को वर्णन हुए कि क़ुरआन शरीफ़ मुस्तक़िल और अब्दी शरीयत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा तआला की हिकमतें और अहकाम दो किस्म के होते हैं कुछ मुस्तक़िल और दाइमी होते हैं, कुछ आनी और वक़्ती जरूरतों के लिहाज़ से सादर होते हैं जबकि अपनी जगह उनमें भी एक इस्तिक़लाल होता है। चाहे वक़्ती ज़रूरत के लिए हों लेकिन हैं यह मुस्तक़िल। "परंतु वह आनी ही होते हैं। उदाहरणतः सफ़र के लिए नमाज़ या रोज़ा के मुताल्लिक़ और अहकाम होते हैं और हालत-ए-क़ियाम में और।" अर्थात सफ़र में उदाहरणतः नमाज़ है तो नमाज़ों के जमा करने के बारे में या क़सर करने के बारे में इजाज़त है और आम हालात में नमाज़ें पूरी पढ़नी चाहिऐं। इसी तरह रोज़े हैं सिफ़रों में नहीं रखने। आम हालात में क़ियाम में रोज़े रखने प्रत्येक सेहत मंद के लिए फ़र्ज़ हैं। फिर फ़रमाया कि उदाहरणतः दूसरा एक हुक्म यह है कि "बाहर जब औरत निकलती है तो वह बुर्क़ा लेकर निकलती है।' यह एक ऐसा हुक्म है जो औरत के लिए एक विशेष हालात में है। "घर में ऐसी ज़रूरत नहीं होती कि बुर्क़ा लेकर फ़िर्ती रहे।" पर्दे का हुक्म है तो घर से बाहर पर्दे का हुक्म है। फिर यह भी कि किन किन से पर्दा करना है और किन से नहीं करना। फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।"..तौरेत और इंजील के अहकाम आनी" मुवाज़ना करते हुए कि वह तो वक़्ती हैं "और वक़्ती ज़रूरतों के मुवाफ़िक़ थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो शरीयत और किताब लेकर आए थे वह किताब मुस्तक़िल और अबदी शरीयत है इस लिए इस में जो कुछ वर्णन किया गया है वह कामिल और मुकम्मल है। क़ुरआन शरीफ़ कानून-ए-मुस्तक़िल है और तौरेत इंजील अगर क़ुरआन शरीफ़ न भी आता तब भी मंसूख़ हो जातीं क्योंकि वह मुस्तक़िल और अबदी क़ानून थे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 42 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः क़ुरआन-ए-करीम की यह एहमीयत कि क़ुरआन-ए-करीम की हिदायात प्रत्येक तरह के हालात के मुताबिक़ हैं, बड़ी मुकम्मल तालीम है और प्रत्येक ज़माने के लिए है। एतराज़ करने वाले उदाहरणतः पर्दे की जो मिसाल दी है इस पर भी एतराज़ कर देते हैं कि इस ज़माने के लिहाज़ से पर्दा ज़रूरी नहीं है और काई दफ़ा हमारी लड़कियां भी मुतास्सिर हो जाती हैं लेकिन ख़ुद ही इस बात को भी ये लोग तस्लीम कर रहे हैं और उस पर बड़े बड़े मज़ामीन लिखे जाते हैं कि औरतों की तन्ज़ीमों ने भी अब शोर मचाना शुरू कर दिया है, अख़बारों में भी कई दफ़ा आने लग जाता है कि औरत मर्द का आपस में जो इख़तेलात है यह बसा-औक़ात बड़ी क़बाहतें पैदा कर रहा है और इस के लिए अब कुछ लोग सोचने भी लग गएहैं कि अलैहदा अलैहदा निज़ाम चाहिए।

फिर अपने आने की ग़रज़ वर्णन फ़रमाते हुए और क़ुरआन-ए-करीम की मु-स्तक़िल शरीयत होने के बारे में आप मज़ीद फ़रमाते हैं कि "इस बात को भी दिल से सुनो कि मेरे मबऊस होने की इल्लत-ए-ग़ाई (मेरा उद्देश्य) क्या है? मेरे आने की ग़रज़ और मक़सूद सिर्फ़ इस्लाम की तजदीद और ताईद है। इस से यह नहीं समझना चाहिए कि मैं इसलिए आया हूँ कि कोई नई शरीयत सिखाऊँ या नए अहकाम दूं या कोई नई किताब नाज़िल होगी। हरगिज़ नहीं। अगर कोई शख़्स यह ख़्याल करता है तो मेरे नज़दीक वह सख़्त गुमराह और बेदीन है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर शरीयत और नबुव्वत का ख़ातमा हो चुका है। अब कोई शरीयतन ह ीं आ सकती। क़ुरआन-ए-मजीद ख़ातमुल कुतुब है। इस में अब एक शोशा या नुक़्ता की कमी बेशी की गुंजाइश नहीं है। हाँ यह सच्च है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बरकात और फ़ैज़ और क़ुरआन शरीफ़ की तालीम और हिदायत के समरात का ख़ातमा नहीं हो गया। वह प्रत्येक ज़माना में ताज़ा बताज़ा मौजूद हैं और इन्ही फ़ैज़ो और बरकात के सबूत के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे खड़ा किया है।"(मल्फ़ू-ज़ात भाग 8 पृष्ठ 245 ऐडीशन 1984 ई.) अर्थात क़ुरआनी तालीम को प्रत्येक तो समझ नहीं सकता। कुछ बातें हैं जो तशरीह तलब हैं और तफ़सीर चाहती हैं जिनको वर्णन करने के लिए इस आख़िरी ज़माने में आप ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने मुझे भेजा है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ ऐसा चमत्कार है कि न वह अव्वल कोई उदाहरण है और न आख़िर कभी होगा।" न पहले उसकी कोई मिसाल है न बाद में कोई मिल सकती है। "इस के फ़्यूज़-ओ-बरकात का दर हमेशा जारी है और वह प्रत्येक ज़माना में इसी तरह नुमायां और दरख़शां है जैसा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त था। इलावा इस के यह भी याद रखना चाहिए कि प्रत्येक शख़्स का कलाम उस की हिम्मत के मुवाफ़िक़ होता है जिस क़दर उसकी हिम्मत और अज़म और मक़ासिद-ए-आलिया होंगे इसी पाया का वह कलाम होगा और वही इलाही में भी यही रंग होता है। जिस तरह आम आदमी के इल्म के मुताबिक़ कलाम करता है इसी तरह वह्यी इलाही का भी एक मुक़ाम है। "जिस शख़्स की तरफ़ उसकी वह्यी आती है जिस क़दर हिम्मत बुलंद रखने वाला वह होगा इसी पाया का कलाम उसे मिलेगा।" यहां यह भी याद रखना चाहिए कि वह्यी के भी मयार हैं, अल्लाह तआला के पैग़ाम के भी मयार हैं। फिर फ़रमाया कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिम्मत-ओ-इस्तिदाद और अज़म का दायरा चूँकि बहुत ही वसीअ था इस लिए आपको जो कलाम मिला वह भी इस पाया और रुत्बा का है कि दूसरा कोई शख़्स इस हिम्मत और हौसला का कभी पैदा न होगा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 57 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "तालीम-ए-क़ुरआनी का दामन बहुत वसीअ है। वह क़ियामत तक एक ही ला-तबदील क़ानून है और प्रत्येक क़ौम और हर समय के लिए है। इसलिए ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ وَمَا نُنَزِّلُهٗۤ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ (हिजर : 22) अर्थात हम अपने ख़ज़ानों में से बक़दर मालूम नाज़िल करते हैं।" फ़रमाया कि "इंजील की ज़रूरत (सिर्फ) क़दर थी इस लिए इंजील का ख़ुलासा (सिर्फ) एक सफ़ा में आ सकता है लेकिन क़ुरआन-ए--करीम की ज़रूरतें थीं सारे ज़माना की इस्लाह।" प्रत्येक ज़माने की इस्लाह करना। "क़ुरआन का उद्देश्य था वहशियाना हालत से इन्सान बनाना, इन्सानी आदाब से मु-हज़्ज़ब इन्सान बनाना। ताकि शरई हदूद और अहकाम के साथ मरहला तै हो। और फिर बा ख़ुदा इन्सान बनाना। जबकि लफ़्ज़ मुख़्तसर हैं परंतु उनके हज़ारहा शोबे हैं। चूँकि यहूदियों, चिकित्सकों, आतिश परस्तों और मुख़्तलिफ़ अक़्वाम में बदरुशि की रूह काम कर रही थी इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इलाही" अर्थात अल्लाह तआला से जो इलम दिया गया उसके मुताबिक़ "सबको संबोधित कर के फ़रमाया। يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا (अल्एराफ़ : 159) "कह दे कि हे इनसानो यक़ीनन में तुम सबकी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ। "इस लिए ज़रूरी था कि क़ुरआन शरीफ़ इन तालीमात का जामा होता जो समय समय पर जारी

रह चुकी थीं और उन तमाम सदाक़तों को अपने अंदर रखता जो आसमान से मुख़्तलिफ़ औक़ात में मुख़्तलिफ़ नबियों के ज़रीये से ज़मीन के बाशिंदों को पहुंचाई गई थीं।' अर्थात पुरानी बातें जो थीं हालात के मुताबिक़ उनको भी अपने अंदर रखता। यह क़ुरआन-ए-करीम में है। और फ़रमाया "क़ुरआन-ए-करीम के मद्द-ए-नज़र तमाम नौ इन्सान था, न कोई विशेष क़ौम और देश और ज़माना। और इंजील के मद्द-ए-सिर्फ़) एक विशेष क़ौम थी इसी लिए मसीह अलैहिस्सलाम ने बार-बार कहा कि "मैं इसराईल की गुमशुदा भेड़ों की तलाश में आया हूँ।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 86 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अल्लाह तआला के हुक्म से यह ऐलान कि मैं सब दुनिया की तरफ़ अल्लाह तआला का रसूल हूँ यह इस बात का भी सबूत है कि क़ुरआन-ए-करीम तमाम दुनिया के लिए हिदायत का ज़रीया है। पुरानी क़ौमों के लिए भी उनके हालात के मुताबिक़ उनको बता दिया, नए आने वालों के लिए भी इस में अहकाम आ गए और यही एक अबदी शरीयत है इस के इलावा और कोई शरीयत नहीं जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उतरी हो।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन शरीफ़ सारी तालीमों का स्रोत है।

एक ख़ज़ाना है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "क़ुरआन-ए-शरीफ़ हिक्मत है और मुस्तक़िल शरीयत है और सारी तालीमों का स्रोत है और इस तरह पर क़ुरआन--ए-शरीफ़ का पहला चमत्कार आला दर्जा की तालीम है और फिर दूसर चमत्का क़ुरआन शरीफ़ का उसकी अज़ीमुश्शान भविष्यवाणियाँ हैं इसलिए सूरः फ़ातिहा और सूरः तहरीम और सूरः नूर में कितनी बड़ी अज़ीमुश्शान भविष्यवाणियाँ हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मक्की ज़िंदगी सारी भविष्यवाणियों से भरी हुई है। इन पर अगर एक दानिशमंद आदमी ख़ुदा से ख़ौफ़ खा कर ग़ौर करे तो उसे मालूम होगा कि किस क़दर ग़ैब की ख़बरें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मिली हैं। क्या उस वक़्त जबकि सारी क़ौम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुख़ालिफ़ थी और कोई हमदरद और रफ़ीक़ न था यह कहना कि سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ (अल् क़मर : 46) छोटी बात हो सकती थी।" अर्थात इस का अर्थ यह है कि उनकी जमाअत को शिकस्त दी जाएगी और वह पीठ फेर के भाग जाएगी। फ़रमाया यह कोई छोटी बात हो सकती है। "अस्बाब के लिहाज़ से तो ऐसा फ़तवा दिया जाता था कि उनका ख़ातमा हो जावेगा अगर ऐसे सामान मौजूद हों तो यह कहा जा सकता है कि उनका ख़ातमा हो जाएगा "परंतु आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ऐसी हालत में अपनी कामयाबी और दुश्मनों की ज़िल्लत और नामुरादी की भविष्यवाणियाँ कर रहे हैं और आख़िर इसी तरह वक़ूअ में आता है।"

यह भविष्यवाणी जिसका क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन है यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ख़ुदा तआला ने मक्का में अता फ़रमाई थी और वह भी इबतेदाई हालात में जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमके मक्का में इंतेहाई कमज़ोरी के हालात थे और फिर भविष्यवाणी पूरी किस तरह हुई। जंग ए अहज़ाब में आम तौर पर हम देखते हैं इस को वहीं मुंतबिक़ किया जाता है, और जगहों पर भी है कि जब कुफ़्फ़ार का भारी लश्कर मुस्लमानों को पीठ दिखा के भाग गया। फिर आप अलै-हिस्सलाम फ़रमाते हैं "फिर तेराह सौ वर्ष के बाद क़ायम होने वाले सिलसिला की और इस वक़्त के आसार-ओ-अलामात की भविष्यवाणियाँ कैसी अज़ीमुश्शान हैं।" अर्थात मसीह मौऊद के ज़माने की भविष्यवाणियाँ। फ़रमाया कैसी अज़ीमुश्शान हैं। कईयों का में पिछले ख़ुत्बे में वर्णन कर चुका हूँ जो अभी तक किस शान से पूरी हो रही हैं। फ़रमाया "दुनिया की किसी किताब की भविष्यवाणियों को पेश करो। क्या मसीह की भविष्यवाणियाँ उनका मुक़ाबला कर सकती हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 43-44 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर क़ुरआन-ए-करीम के मुहासिन वर्णन हुए कि क़ुरआन का प्रत्येक हुक्म مُعَلَّلٌ بِأَغْرَاض आप फ़रमाते हैं : "यह ख़ूबी क़ुरआनी तालीम में है कि इस का प्र-त्येक एक हुक्म مُعَلَّلٌ بِأَغْرَاضٍ وَمَصَالِح है।" अर्थात अग़राज़ और मसाले से परिपूर्ण है। इस का उद्देश्य है। "और इस लिए जाबजा क़ुरआन-ए-करीम में ताकीद है कि अक़्ल, फ़हम, तदब्बुर, फ़क़ाहत और ईमान से काम लिया जाए।" फ़क़ाहत यह है कि अक़्ल और सोच से काम लूँ और ईमान से काम लूँ। ईमान भी ज़रूरी है। "और क़ुरआन-ए-मजीद और दूसरी किताबों में यही कुछ अंतर से है और किसी किताब ने अपनी तालीम को अक़्ल और तदब्बुर की दकीक़ और आज़ाद नुक्ता--चीनी के आगे डालने की जुर्रत ही नहीं की।"

आप अलैहिस्सलाम ने इंजील की मिसाल देते हुए फ़रमाया कि "इंजील ख़ामोश के चालाक और अय्यार हामियों ने इस ख़्याल से कि इंजील की तालीम अकली ज़ोर के मुक़ाबिल बे-जान महिज़ है निहायत होशयारी से अपने अक़ायद में इस अमर को दाख़िल कर लिया कि तस्लीस और कुफ़्फ़ार है ऐसे राज़ हैं कि इन्सानी अक़ल उनकी कुनह तक नहीं पहुंच सकती।" बहुत गहरा इल्म है इस तक तुम पहुंच नहीं सकते। इसलिए जहां जिस तरह कहा जाता है इस को क़बूल कर लो लेकिन "बरख़िलाफ़ इस के फ़ुरकान-ए-हमीद की यह तालीम है इन إِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَ الْأَرْضِ وَ اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَ النَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ۔ الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللهَ (आल-ए--इमरान 191-192) अर्थात आसमानों की बनावट और ज़मीन की बनावट और रात और दिन का आगे पीछे आना दानिशमंदों को इस अल्लाह का साफ़ पता देते हैं। जिसकी तरफ़ मज़हब इस्लाम दावत देता है। इस आयत में किस क़दर साफ़ हुक्म है कि दानिशमंद अपनी दानिशों और मग़ज़ों से भी काम लें।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 62-63 ऐडीशन 1984 ई.) ग़ौर करो।

फिर क़ुरआन शरीफ़ के बारे में यह फ़रमाते हुए कि एक महफ़ूज़ किताब है और यह भी कि तालीम-ए-क़ुरआन की जो शहादत है वह क़ानून-ए-क़ुदरत की ज़बान से होती है

फ़रमाया कि "अल्लाह तआला फ़रमाता है إِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल् वाकेया 78 से 80)" निसन्देह यह एक इज़्ज़त वाला क़ुरआन है एक छिपी हुई किताब में अर्थात कि इस में महफ़ूज़ चीज़ है। कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पाक किए हुए लोगों के। फ़रमाया "बल्कि यह सारा सहीफ़ा क़ुदरत के मज़बूत संदूक़ में महफ़ूज़ है। क्या मतलब कि यह क़ुरआन-ए-करीम एक छिपी हुई किताब में है। इस का वजूद काग़ज़ों तक ही महिदूद नहीं बल्कि वह एक छिपी हुई किताब में है जिसको सहीफ़ा फ़तरत कहते हैं। अर्थात क़ुरआन की सारी तालीम की शहादत कानून-ए-क़ुदरत के ज़र्रा ज़र्रा की ज़बान से अदा होती है। इस की तालीम और इस की बरकात कत्था कहानी नहीं जो मिट जाएं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 प्रष्ठ 64-65 ऐडीशन 1984 ई.)

बल्कि जो उसे समझेगा, अमल करेगा वह अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल भी करेगा। लेकिन यह याद रखना चाहिए कि इस के इसरार, उस की गहराई पाक लोगों पर ही खुलती है और इस के लिए पाक लोगों की सोहबत से फ़ैज़याब होने की भी ज़रूरत है और इस ज़माने में यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं कि अल्लाह तआला के दिए हुए इलम से फ़ैज़ पा कर आपने जो बयान फ़रमाया उस को हमें देखना चाहिए, ग़ौर करना चाहिए और वही तफ़सीरें जो हैं वह आगे आपके इलम के मुताबिक़ ही जमाअत अहमदिया में जो लिटरेचर है इस में वर्णन हैं।

क़ुरआन-ए-करीम का नाम "ज़िक्र" क्यों रखा गया है इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन-ए-करीम का नाम ज़िक्र रखा गया है इस लिए कि वह इन्सान की अंदरूनी शरीयत याद दिलाता है।" फिर फ़रमाया ".. क़ुरआन कोई नई तालीम नहीं लाया बल्कि इस अंदरूनी शरीयत को याद दिलाता है जो इन्सान के अंदर मुख़्तलिफ़ ताक़तों की सूरत में रखी है। हिल्म है, ईसार है, शुजाअत है, जबर है, ग़ज़ब है, क़नाअत है इत्यादि। उद्देश्य जो फ़ित्रत बातिन में रखी थी क़ुरआन ने उसे याद दिलाया। जैसे فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ (वाक्या : 79) अर्थात सहीफ़ा फ़तरत में कि जो छिपी हुई किताब थी और जिसको प्रत्येक एक शख़्स न देख सकता था "इस को याद दिलाया। अतः इस नज़र से भी हमें क़ुरआन पढ़ना चाहिए।

क़ुरआन शरीफ़ इन्सान की जो फ़ित्रती सलाहियतें हैं उनकी फ़ित्रत सहीहा की तरफ़ राहनुमाई करता है।

अतः इस हक़ीक़ी फ़ित्रत को जिससे आजकल विशेषता इन्सान दूर हट रहा है क़ुरआन शरीफ़ उस को निकाल के वर्णन करता है और इस दूर हटने की वजह से ही हम देखते हैं कि इस ज़माने में कुछ ग़ैर अख़लाक़ी और ग़ैर फ़ित्री क़ानून बनाने की तरफ़ रुजहान पैदा हो रहा है। इन्सान उसे बिगाड़ने की कोशिश कर रहा है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि क़ुरआन पर ग़ौर करो, तदब्बुर करो। इस पर अमल तुम्हें इन्सानी फ़ित्रत के आला मयार दिखाएगा। अतः उस पर ग़ौर करना है और इस नज़र से हमें क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना और समझना चाहिए और फिर आज़ादी के नाम पर आजकल बच्चों और बड़ों के ज़हनों को जो ज़हर-आलूद किया जा रहा है इस से भी हम बच सकेंगे।

बहुत सारे वालदैन भी सवाल करते हैं कि बच्चे स्कूलों से जो सीख के आते हैं इस किस तरह जवाब दें? हम अगर ग़ौर कर के पढ़ो, तफ़सीर पढ़ो, जमाअत का लिट-रेचर पढ़ें जो क़ुरआन करीम के अहकामात की रोशनी में ही है तो फिर बच्चों के जवाब भी वालदैन दे सकते हैं।

फिर फ़रमाया : "इसी तरह इस किताब का नाम वर्णन किया ताकि वह पढ़ी जाए तो वह अंदरूनी और रुहानी कुव्वतों और इस नूर-ए-क़लब को जो आसमानी

वदीअत इन्सान के अंदर है, याद दिलावे। उद्देश्य अल्लाह तआला ने क़ुरआन को भेज कर बजा-ए-ख़ुद एक रुहानी चमत्कार दिखाया।' बार-बार पढ़ो तो यह तुम्हें याद दिलाता रहेगा। "ताकि इन्सान उन मआरिफ़ और हक़ायक़ और रुहानी ख़वारिक़ को मालूम करे जिनका उसे पता न था मगर अफ़सोस कि क़ुरआन की इस इल्लत--ए-ग़ाई को छोड़कर जो هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल्बकरः : 3) है इस को सिर्फ चंद क़िसस का मजमूआ समझा जाता है और निहायत बेपर्वाई और ख़ुदग़रज़ी से मुशरे-कीन-ए-अरब की तरह पहलों कि कहानिया कह कर टाला जाता है।" फ़रमाया कि "वह ज़माना था आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद का और क़ुरआन के नुज़ूल का। जब वह दुनिया से गुमशुदा सदाक़तों को याद दिलाने के लिए आया था। अब वह ज़माना आ गया जिसकी निसबत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी की थी कि लोग क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन उनके हलक़ से नीचे क़ुरआन न उतरेगा।' यही हम देखते हैं बेशुमार क़ारी हैं बेशुमार पढ़ने वाले हैं लेकिन अमल कोई नहीं। फ़रमाया:"अतः अब तुम इन आँखों से देख रहे हो कि लोग क़ुरआन कैसी ख़ुश-अल्हानी और उम्दा किरात से पढ़ते हैं लेकिन वह उनके हलक़ से नीचे नहीं गुज़रता।" अमल कोई नहीं। "इस लिए जैसे क़ुरआन-ए-करीम जिसका दूसरा नाम ज़िक्र है इस इबतेदाई ज़माना में इन्सान के अंदर छिपी हुई और फ़रामोश शूदा सदाक़तों और वदीअतों को याद दिलाने के लिए आया था।अल्लाह तआला के इस वाद की दृष्टि से कि إِنَّا لَهُ لَحَافِظُوْنَ(हिज्र :10) इस ज़माना में भी आसमान से एक मुअल्लिम आया जो اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (अल् जुमा : 4) का मिस्दाक़ और मौऊद है वह वही है जो तुम्हारे दरमयान बोल रहा है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 प्रष्ठ 60 ऐडीशन 1988ए-)अपने आपको मुख़ातब कर के फ़रमाया। काश कि मुस्लमान अक़ल करें और इस शख़्स की जिसे ख़ुदा तआला ने भेजा है बात सुनें। अपने अन्दु-रूने देखें। ज़माने की ज़रूरत देखें। मुस्लमानों के उमूमी हालात देखें। सिर्फ ज़ाहिरी फतवों पर-ज़ोर देकर इस्लाम को बदनाम करने की कोशिश न करें। क़ुरआन-ए--करीम की हक़ीक़त को बहरहाल हम अहमदियों को अपने हर वक़त जायज़े लेते रहना चाहिए कि हम किस हद तक क़ुरआन-ए-करीम की तालीम की हक़ीक़त को समझते और इस पर अमल करने की कोशिश करते हैं या कर रहे हैं।

फिर यह बात वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन शरीफ़ उलूम हुक्का से वाक़िफ़ चाहता है

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "अल्लाह तआला जैसे यह चाहता है कि लोग उस से डरें वैसे ही यह भी चाहता है कि लोगों में उलूम की रोशनी पैदा हो वह सिर्फ डर नहीं बल्कि उलूम की रोशनी भी पैदा हो "और इस से वह मार्फ़त की मंज़िलों को तै कर जावें।' क्यों पैदा हो, ताकि मार्फ़त पैदा हो। सोचें वसीअ हों "क्योंकि उलूम--ए-हुक़्क़ा से वाक़फ़ीयत जहां एक तरफ़ सच्ची ख़शीयत पैदा करती है वहां दूसरी तरफ़ उन उलूम से ख़ुदा-परस्ती पैदा होती है।" एक मोमिन जब इस तरह सोचता है, क़ुरआन शरीफ़ पर ग़ौर करता है और उलूम हासिल जो दुनियावी उलूम हैं उनको भी क़ुरआन-ए-करीम पर परखता है तो मार्फ़त भी पैदा होती है, ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ भी पैदा होता है। ख़शीयत पैदा होती है। फ़रमाया लेकिन "कुछ बदक़िस्मत ऐसे भी हैं जो उलूम में मुनहमिक हो कर क़ज़ा-ए-वकदर से दूर जा पड़ते हैं और अल्लाह तआला के वजूद पर ही शकूक पैदा कर बैठते हैं और कुछ ऐसे हैं जो क़ज़ा-ओ-क़दर के क़ायल हो कर उलूम ही से दस्तबरदार हो जाते हैं।' या तो एक तरफ़ यह है कि दुनियावी इलम के नाम पर, नए इलम के नाम पर ख़ुदा तआला को भूल गए या दूसरे अल्लाह तआला की तरफ़ आने के नाम पर उलूम से घबरा गए और उसे छोड़ दिया और कह दिया यह ग़लत है। फ़रमाया "परंतु क़ुरआन-ए-शरीफ़ ने दोनों तालीमें दी हैं और कामिल तौर पर दी हैं। क़ुरआन शरीफ़ उलूम-ए-हुक़्क़ा से इस लिए वाक़िफ़ करना चाहता है और इस लिए इधर इन्सान को मुतवज्जा करता है कि इस से ख़शीत-ए-इलाही पैदा होती है और ख़ुदा तआला की मार्फ़त में जूँ-जूँ तरक़्क़ी होती है उसी क़दर ख़ुदा तआला की अज़मत और इस से मुहब्बत पैदा होती जाती है और इन्सान को क़ज़ा-ए-वकदर के नीचे रहने की इस लिए तालीम देता है कि इस में अल्लाह तआला की ज़ात पर तवक्कुल और भरोसा की सिफ़त पैदा हो और वह राज़ी रहने की हक़ीक़त से अवगत हो कर एक सच्ची सकेंत और इतमेनान जो निजात का असल उद्देश्य और मंशा है पूरा करे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 223-224 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर फ़रमाया कि "अल्लाह तआला ने सच्चे उलूम का मंबा और स्रोत क़ुरआन शरीफ़ इस उम्मत को दिया है। जो शख़्स उन हक़ायक़ और मआरिफ़ को पा लेता है जो क़ुरआन-ए-शरीफ़ में बयान किए गए हैं और जो महिज़ हक़ीक़ी तक़्वा और ख़ुशी से हासिल होते हैं उसे वह इलम मिलता है जो उस को अंबिया बनीइसराईल का मसील बना देता है। हाँ यह बात बिल्कुल सच्च है कि एक शख़्स को जो हथियार दिया गया है अगर वह इस से काम न ले तो यह उस का अपना क़सूर है न कि इस हथियार का। इस वक़्त दुनिया की यही हालत हो रही है। मुस्लमानों ने बावजूदि इसके कि क़ुरआन-ए-शरीफ़ जैसी बेमिसल नेअमत उनके पास थी जो उनको प्रत्येक गुमराही से निजात बख़शती और प्रत्येक तारीकी से निकालती है लेकिन उन्होंने इस को छोड़ दिया और इस की पाक तालीमों की कुछ पर्वा न की। नतीजा यह हुआ कि वह इस्लाम से बिल्कुल दूर जा पड़े हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 349 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मुस्लमान क़ु-रआन-ए-करीम की अज़ीम तालीम से दूर हो कर फ़क़त नाम के मुस्लमान हैं। मुख़्त-लिफ़ वक़्तों में लोग सोशल मीडीया पर कुछ छोटे छोटे प्रोग्राम या कल्पि दिखाते रहते हैं, जो लोगों का इंटरव्यू लेते हैं जिससे पता चलता है कि इस्लाम की बुनियादी तालीम और तारीख़ का उनको पता ही नहीं। अतः मौलवी के कहने पर नामूस-ए-रिसालत या क़ुरआन या सहाबा के नाम पर जमाअत अहमदिया के ख़िलाफ़ नारे लगाने और नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करते है। बंगलादेश से मुझे किसी ने लिखा कि जब जलूस आया, उन्होंने हमला किया तो एक लड़का उठा के शायद पत्थर मार रहा था। उसे हमारे अहमदी ने कहा तुम यह कर किया रहे हो? यह क़ुरआन में लिखा है? यह इस्लाम की तालीम है? बताओ कहाँ है? हम तो कलमा पढ़ने वाले हैं। उसने फ़ौरन वहीं पत्थर नीचे फेंक दिया। तो वह तो मौलवी जो जोश दिलाते हैं उस के मुताबिक़ वे काम करने लग जाते हैं।

अल्लाह तआला इन शरीरों के उपद्रव से हमें महफ़ूज़ रखे और हमें यह तौफ़ीक़ दे कि हम इस रमज़ान में भी और बाद में भी क़ुरआन-ए-करीम को समझने, सीखने और अमल करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें दुनिया की ग़लाज़तों से भी बचा के रखे।

रमज़ान में दुआओं की तरफ़ भी तवज्जा दें।

पहले भी मैंने कहा था अल्लाह तआला प्रत्येक जगह प्रत्येक अहमदी को प्रत्येक उपद्रव से बचाए और अल्लाह तआला की नज़र में जो नाक़ाबिल-ए-इस्लाह हैं उनको इबरत का निशान बनाए ताकि दूसरे लोग अल्लाह तआला के अहकामात पर अमल करने वाले बन सकें। दुनिया के लिए उमूमी तौर पर भी दुआ करें।

अल्लाह तआला जंग की आफ़त से दुनिया को बचाए अब मैं बाअज़ मरहूमीन का वर्णन कर ना चाहता हूँ जिसमें सबसे पहले हमारे एक मुरब्बी सिलसिला, मुबल्लिग सिलसिला हैं जो इंतेहाई वफ़ा से अपने वक़्फ़ को निभाने वाले थे। बड़े आजिज़ इन्सान थे और बड़ा लंबा अरसा उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली और उन्होंने ख़िदमत का हक़ अदा किया।

उनका नाम मुनव्वर अहमद ख़ुरशीद साहिब है। मग़रिबी अफ़्रीक़ा में मुबल्लिग सिलसिला थे।

पिछले दिनों उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके दादा हज़रत मियां अब्दुलकरीम साहिब के ज़रीये से आई थी जिन्हों ने 1903 ई. में जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम करम दीन वाले मुक़द्दमे में जेहलम तशरीफ़ ले गए थे उस वक़्त बैअत की थी। मौलवी ख़ुरशीद साहिब के वालदैन के हाँ जो भी औलाद होती थी वह बीमार हो के फ़ौत हो जाती थी। जब आपकी पैदाइश हुई तो आप बीमार हो गए। कोई रस्ता नज़र नहीं आता था तो उनके दादा मियां अब्दुलकरीम साहिब जो सहाबी थे उन्होंने फ़ैसला किया कि इस बच्चे को ख़ुदा की राह में वक़्फ़ कर दिया जाए। कहते हैं इसलिए कि अगर ख़ुदा को ज़रूरत हुई तो ख़ुद ही बचा लेगा। बहरहाल इस दौरान एक चिकि-त्सक गांव में आया जो किसी दौर के गांव का रहने वाला था उसने ईलाज किया और अल्लाह तआला ने मोजज़ाना रंग में उनको शिफ़ा दी। उनके सुसर मुहम्मद ख़ान दरवेश साहिब ने भी उनके बारे में ख़ाब देखी थी कि आप एक बहुत बुलंद और रोशन मीनार पर हैं और उन दरवेश साहिब को बताया गया कि आप अहमदियत के मीनार को बहुत रोशन करेंगे और अहमदियत की ख़िदमत की बहुत तौफ़ीक़ पाएँगे और अल्लाह तआला ने उनको तौफ़ीक़ दी।

जामिआ से फ़ारिग़ हुए, कुछ अर्से तक पाकिस्तान में रहे। फिर 1983 ई. में यह अफ़्रीक़ा चले गए। गेम्बया में और सेनेगाल इत्यादि में उनकी लंबे अर्से की ख़िदमात हैं। सेनेगाल में, गेम्बया में बतौर अमीर के भी उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। फिर बीमारी की वजह से 2005 ई. में यहां यू.के आगए थे लेकिन जब तक वहां कोई बाक़ायदा मुरब्बी नहीं चला गया और बाक़ायदा निज़ाम क़ायम नहीं हो गया यह यहां से भी सेनेगाल जमाअत का निज़ाम चलाते रहे। फिर उस अर्से में यह 2008 ई. से

2012 ई. तक जामिआ यू.के में बतौर उस्ताद के भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाते रहे। जहां भी मौक़ा मिला उन्होंने बड़ा आला काम किया। बहुत सी बैअतों की उनको सआदत मिली। चालीस पारलीमानी मैंबरान ने उनके ज़रीये से अहमदियत क़बूल की और इस कामयाबी पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमाहुल्लाह तआला ने जलसा सालाना के ख़िताब में उनको "फ़ातिह सेनेगाल" के ख़िताब से भी नवाज़ा। जलसा सालाना जर्मनी में एक दफ़ा यह पंद्रह मैंबरान असैंबली को ले के आए। फिर जो पामा (PAMA) ऐवार्ड हैं जो मुख़्तलिफ़ मुरब्बियान के लिए नर्धारत किए हुए हैं वह अब्दुर्रहीम नय्यर साहिब का ऐवार्ड उनको भी मिला। मेरे कहने पर ये स्पेन भी जाते रहे। वहां जो अफ़्रीक़ी आबाद हैं उनमें तब्लीग़ की और बड़ा अच्छा काम किया। बहुत बैतें वहां हुई हैं। आँसारुल्लाह बर्तानिया के तहत ऑनलाइन तालीमुल-क़ुरआन क्लास भी लेते रहे। वफ़ात तक यह काम जारी रहा। उनके पीछे रहने वालों में तीन बेटे और तीन बेटियां और पत्नी हैं। एक बेटे उनके यहां यू.के में ही मुरब्बी हैं।

दाऊद हनीफ़ साहिब जो आजकल जामिआ कैनेडा के प्रिंसिपल हैं वह भी अफ़्रीक़ा में गेम्बया में अमीर जमाअत थे जब यह वहां गए हैं। वह कहते हैं कि 1983 ई. से 1994 ई. तक उनके साथ ख़िदमत का अवसर मिला और मुबल्लिग के साथ साथ यह स्कूल में इस्लामीयात भी पढ़ाते थे। कहते हैं सेनेगाल में तब्लीग़ के जो हालात थे वह ऐसे थे कि वहां आसानी से तब्लीग़ नहीं की जा सकती, बड़े मुश्किल हालात थे। कहते हैं क़स्बा फ़र्फ़ीनी में 1985 ई. के आख़िर में उनको तबदील किया गया जो सेनेगाल के बॉर्डर पर वाक़्य है। यहां रह कर सेनेगाल में क़ियाम-ए-अहमदियत का जो मन्सूबा था इस को कामयाब करना उद्देश्य था। बड़ा मुश्किल काम था। सैनीगाली हुकूमत किसी पाकिस्तानी को वीज़ा नहीं देती थी लेकिन मौलवी मुनव्वर ख़ुरशीद साहिब में यह मलिका था कि लोगों में घुल मिल जाते थे और ताल्लुक़ात बड़ी अच्छी तरह बनाते थे। फिर उनको फ़्रांसीसी ज़बान भी किसी क़दर आती थी। इसलिए जब उनका वहां ताय्युन किया गया तो जल्द उन्होंने वहां बॉर्डर पर आफ़सरान से ताल्लुक़ात क़ायम किए। फिर इन ताल्लुक़ात की वजह से सेनेगाल आना जाना शुरू कर दिया और फिर वहां एक प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर के ज़रीये से उन्होंने मज़ीद फ़्रैंच ज़बान सीखनी शुरू कर दी क्योंकि उन्होंने वहां के लोकल आफ़िसरान से इजाज़त ले ली थी कि मैं यहां उनके हेडमास्टर अब्दुल्सलाम बारी साहिब के साथ बैठ के फ़्रैंच सीख सकता हूँ। बहरहाल यह एक कामयाबी थी और इस तरह वह वक़फ़े वक़फ़े से सेनेगाल जाते रहे। फिर एक विशेष किस्म पास (pass) था वह उनको मिल गया जिसके तहत गेम्बया की गाड़ीयों में सेनेगाल जाया जा सकता था। इस में यह लिटरेचर ले जाते, वहां तब्लीग़ करते और इस के ज़रीये से उन्होंने बहुत सारी बैअतें करवाईं। काओलक रीजन जो था वहां मुख़्तलिफ़ अहमदी पहले ही थे। वहां एक लोकल मुबल्लिग थे हमिदा मुबई साहिब उनके साथ मिल के फिर उन्होंने काम किया और मुबल्लेग़ीन के ज़रीया वहां मज़ीद जमाअतें फैलीं। वहां एक तो सड़कें नहीं थीं टूटी सड़कें अफ़्रीक़ा में या कच्ची सड़कें दूसरे कुछ जगह सड़कें होती नहीं थीं लेकिन ये दूर दराज़ इलाक़ों में मोटर साईकल पर पहुंच जाते थे और मोटर साईकल का भी रास्ता ऐसा था कि झाड़ियाँ इन पगडंडियों के इतनी क़रीब आई होती थीं कि उनकी टांगें लहूलुहान हो जाती थीं लेकिन कभी उन्होंने पर्वा नहीं की और अपने काम में मगन थे।

फिर दाऊद हनीफ़ साहिब यह लिखते हैं कि शुरू में तो ये बड़ा मुश्किल काम था। बड़ी सावधानी से हम तब्लीग़ करते थे। फिर आहिस्ता-आहिस्ता जब ताल्लुक़ात बन गए, जमाअत का तआरुफ़ हो गया और ये बातें कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अहयाए इस्लाम के लिए मबऊस हुए हैं लोगों को पहुंचानी शुरू कर दीं और आफ़सरान को भी यह पैग़ाम पहुंचने लगा तो फिर काफ़ी आज़ादी से उनका सेनेगाल में आना जाना शुरू हो गया। बाक़ायदा दौरे करते थे और फिर इसी तरह काओलक रीजन में अक्सर आबादियों में जमाअत का नफ़ुज़ हो गया। मुतअद्दि जमाअतें बन गईं। उनमें इज़ाफ़ा भी होने लगा। और मोटर साईकल का तो मैंने ज़िक्र किया है, कुछ जगह गांव ऐसे भी थे जहां मोटर साईकल इत्यादि भी available नहीं थे तो रेढ़ों पर, गधा गाड़ीयों पर बैठ के उन्होंने लंबा लंबा सफ़र किया और मुख़्तलिफ़ गांव में पहुंचे बल्कि आजकल के कुछ मुबल्लेग़ीन ने लिखा है कि अब हम जब वहां गए तो वहां के लोगों ने बताया कि यहां बहुत पहले मौलाना मुनव्वर ख़ुरशीद साहिब हमारे पास आया करते थे और बड़े मुश्किल हालात में आया करते थे और वहां जा के यह रहते थे, तब्लीग़ करते थे। रातें भी वहीं लोगों में गुज़ारते थे और ख़ुराक भी उनकी उबली हुई चरी या बाजरा उबाल के पानी के साथ खा लिया। बस यही उनकी ग़िज़ा होती थी और फिर तब्लीग़ करते हुए आगे बढ़ जाते थे। कभी उन्होंने यह पर्वा नहीं की कि रिहायश की कोई अच्छी जगह है कि नहीं। खाना मिलता है कि नहीं मिलता। जहां जो जगह उपलब्ध हुआ रह गए और जो खाने को मिला खा लिया और इस तरह लोगों में यह बड़े हरदिलअज़ीज़ हुए। तब्लीग़ भी बड़ी अच्छी की।

जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे ने यह स्वप्न देखा था कि फ़्रैंच स्पीकिंग (French speaking) मुल्कों में जमाअत की तरक़्क़ी हो रही है तो फिर वहां जिस रीजन में थे वहां से निकल के सेनेगाल की तरफ़ भी उन्होंने तवज्जा की। उनको वहां भिजवाया गया, वहां बाअसर लोगों को तब्लीग़ की और इस तरह फिर मैंबरान पार्लीमैंट को तब्लीग़ की और चौदह मैंबरान पार्लीमैंट को बैअत की तौफ़ीक़ मिली। इस का असर भी जमाअत पर बड़ा अच्छा हुआ और फिर वहां भी जमाअत मज़बूत होने लगी। निज़ाम जमाअत को मज़बूत करने के लिए मालमीन की तादाद बढ़ने के साथ साथ तालीम-ओ-तर्बीयत और ट्रेनिंग की ज़रूरत थी तो सालाना बुनियादों पर यह प्रोग्राम जारी रखा और मौलाना साहिब ने बड़ी हिम्मत से यह काम भी सरअंजाम दिया। 1997 ई. में उनको सेनेगाल का अमीर मुक़र्रर कर दिया गया। बड़ी मेहनत से उन्होंने आख़िरी वक़्त तक अपनी ख़िदमत को निभाया। ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत का जज़बा उन्होंने लिखा है कि कूट कूट के भरा था और हक़ीक़त में यही मैंने देखा है जब यहां आए हैं। दस वर्ष से काफ़ी बीमार थे बीमारी में भी जब भी कोई काम उनको दिया गया तो फ़ौरन उस को बजा लाने की कोशिश करते।

तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। वहां सेनेगाल में वजीउल्लाह साहिब मुबल्लिग हैं। यह कहते हैं कि जब मैं यहां आया हूँ तो मुनव्वर साहिब का नाम बहुत सुना। और जहां भी जाता था लोग बड़ी मुहब्बत से उनका ज़िक्र करते थे।

लोकल मुअल्लेमीन कुछ वाक़ियात वर्णन करते हैं। मुहम्मद व तफ़सीर मारा साहिब लोकल मुअल्लिम हैं। वह कहते हैं मुनव्वर ख़ुरशीद साहिब के ज़रीये मैं ने अहमदियत क़बूल की और उन्होंने मुझे अच्छी तालीम दी और बहुत मेहनत और मुहब्बत से मेरी तर्बीयत की जिसके नतीजे में जामिआ अहमदिया घाना से तालीम हासिल की और जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। कहते हैं मैंने बड़ा लंबा अरसा उनके साथ गुज़ारा है। यह सैनीगालेन हैं। लिखते हैं। ख़िलाफ़त से इशक़ की हद तक उन्हें मुहब्बत थी और कहते हैं विशेष बातें मुझे भी कहा करते थे कि ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ रखना। दूसरे यह कि मैं ने उनमें देखा कि कभी उन्होंने तहज्जुद नहीं छोड़ी और हमें भी यह तलक़ीन करते थे कि हमेशा तहज्जुद पढ़ो और तहज्जुद में विशेषता ख़लीफ़तुल मसीह के लिए दुआएं किया करो। यही मुअल्लिम साहिब लिखते हैं कि बड़े मुत्तक़ी शख़्स थे, बड़ी मेहनत करने वाले थे, पूरे सेनेगाल के उन्होंने दौरे किए। हमेशा यह कोशिश होती है कि प्रत्येक गांव में जाएं और मसीह मुहम्मदी का पैग़ाम पहुंचा के आएं। कहते हैं ख़ाकसार इस बात का शाहिद है कि जब मुनव्वर साहिब जमाअती काम में मशग़ूल होते तो आपको दिन रात की या खाने पीने की कोई पर्वा नहीं होती थी। ख़ुदा तआला से बहुत क़रीबी ताल्लुक़ था। अक्सर मुशाहिदा किया करते थे। कहते हैं एक दफ़ा एक जमाअती फंक्शन था वहां लोग आए हुए थे। एक अहमदी वहां बीमार हो गए उन्हों ने वापस जाना चाहा। उन्होंने उनको इजाज़त दे दी लेकिन जब बस पर जगह मिल गई और बस पर बिठाने लगे तो मुनव्वर साहिब ने उनको रोक दिया कि उस पर न बैठें। दूसरी बस पर बैठें। और कहते हैं मेरे दिल में उस वक़्त ये ख़्याल आया था कि इस बस को कोई हादिसा पेश आ जाना है और अगर यह इस तरह हुआ तो लोग कहेंगे कि देखो जमाअती फंक्शन पर गया था और वहां यह हादिसा की वजह से फ़ौत हो गया। बहरहाल हुआ वही, जिस बस से रोका था इस को हादिसा पेश आ गया। दूसरी बस में बैठे थे तो ख़ैरीयत से वह शख़्स अपने घर पहुंच गया। इस से भी लोगों का बड़ा ईमान बढ़ा और लोगों में वहां मुहब्बत का यह हाल है कि सेनेगाल में मुख़्तलिफ़ जगहों पर उनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब अदा की गई। ग़ैर अहमदी भी इस में बहुत ज़्यादा शामिल हुए।

फिर फाटक के सदर जमाअत रोगन फ़ाई साहिब कहते हैं कि जिस फ़दाईत से मुनव्वर ख़ुरशीद साहिब काम करते थे किसी और के लिए करना बहुत मुश्किल है।

फिर जालू साहिब लोकल मुअल्लिम हैं कहते हैं जब वह पहली दफ़ा सेनेगाल आए तो एक लंबा अरसा मुझे मुनव्वर साहिब के साथ काम करने की तौफ़ीक़ मिली। बड़े मुत्तक़ी और बहादुर शख़्सियत के मालिक थे। जमाअती दौरों के दौरान बहुत हिक्मत और बहादुरी से तब्लीग़ी सरगर्मीयां सरअंजाम दिया करते थे। इसी तरह इंसाफ़ पसंद थे। जमाअत के साथ बहुत मुहब्बत और इन्साफ़ का सुलूक करते

राजा बुरहान साहिब कहते हैं कि आख़िरी दिनों में जब ये बीमार हुए तो उनका

डाईलेसज़ (Dialysis) रोज़ाना होता था। एक दिन एक शादी पर मिले तो कहते हैं मैंने दुकान खोल ली है। मैंने कहा दुकान खोलने से क्या मतलब? तो कहने लगे घर में होता हूँ तो मैंने घर के बाहर मेज़ लगा ली है वहां गरमीयों में पानी रख लेता हूँ लिटरेचर रख लेता हूँ और आने जाने वालों को पानी की ज़रूरत हो तो पानी पिला देता हूँ और लिटरेचर दे देता हूँ। तो इस तरह फ़ारिग़ नहीं बैठे, इस बीमारी में भी नया रस्ता उन्होंने तलाश कर लिया। इसलिए वह लोग जो कहते हैं कि तब्लीग़ किस तरह करें। तब्लीग़ करने के रास्ते अगर तलाश किए जाएं तो मिल जाते हैं, सिर्फ जोश होना चाहिए, शौक़ होना चाहिए।

और फिर मुनव्वर ख़ुरशीद साहिब की एक प्रतिभा यह भी थी कि ज़बान जल्दी सीख लेते थे। गेम्बया में भी मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोली जाती हैं और उनको ज़बानें आती थीं और यह कहा करते थे कि हमारे तीन गैमबेन मुबल्लेग़ीन जो यहां से पढ़के गए हैं, अब्दुल्लाह साहिब और अब्दुर्रहिमान साहिब और मुहम्मद मुबाअ साहिब। ये तीनों मुख़्तलिफ़ क़बीलों के हैं, ये एक दूसरे की ज़बान नहीं समझ सकते लेकिन मैं इन तीनों क़बीलों की ज़बान जानता हूँ।

उनकी पत्नी नुसरत जहां साहिबा कहती हैं। बच्चों की तर्बीयत में बहुत तवज्जा दी। बड़ा प्यार करने वाले वजूद थे। ख़िलाफ़त से बेपनाह मुहब्बत थी। वक़्फ़ का हक़ अदा किया। इख़्तेलाफ़ात को मिटाने और सुलह करवाने की प्रत्येक मुम्किन कोशिश करते। मेहमान-नवाज़ी बहुत थी। अफ़्रीक़ा में दौरे पर जाते तो हमें कह देते थे तुम बस मेरी यह न फ़िक्र करना कि मैं कब आऊँगा। बस जब मैं फ़ारिग़ हो जाऊँगा तो मैं घर वापस आ जाऊँगा। तब्लीग़ का कहती हैं जुनून था। स्पेन में भी उनको तब्लीग़ का बहुत मौक़ा मिला। बीमारी के बावजूद वहां जाते रहे। इस तरह से पुराने राबते उन्होंने बहाल किए।

उनके बेटे मुहम्मद अहमद ख़ुरशीद मुरब्बी हैं। वह कहते हैं कि हमें हमेशा यह नसीहत करते कि लोगों के काम आना चाहिए क्योंकि यह भी एक ख़ूबसूरत इबादत है, ख़ुदा इस से राज़ी होता है। कहते हैं हमने उनमें हमेशा इस्लामी तालीम का एक अमली नमूना देखा।

स्पेन से सलमान सलमी साहिब कहते हैं कि स्पेन में क़ियाम के दौरान कई बार उनके साथ तब्लीग़ पर निकलने का मौक़ा मिला। हैरत-अंगेज़ बात बार-बार देखी कि आप किसी अफ्रीकन राहगीर से सलाम दुआ करते और देखते ही देखते उसे राम कर लेते और कुछ ही वक़्त में इस से एक मुस्तहकम ताल्लुक़ पैदा हो जाता और साथ साथ बताते जाते कि उस का ताल्लुक़ अमुक गांव से है और इस के इर्द-गिर्द के इलाक़े यह हैं। मैं वहां गया हूँ और इस इलाक़े के लोग बहुत मुख़लिस हैं। वहां के बाअसर लोगों को भी जानते थे क्योंकि अफ्रीकन ज़बान में बात कर रहे होते थे इसलिए वह शख़्स भी उनकी बातें सुनता। उसे हैरत भी होती ख़ुशी भी होती और दो तीन मुलाक़ातों के बाद फिर वह जमाअत के क़रीब आ जाता तो फिर उस को पहचानते।

कहते हैं उनका यह नहीं होता था कि पहली दफ़ा ही पैग़ाम पहुंचाएं। पहले ज़ाती ताल्लुक़ात बनाते थे फिर दूसरी तीसरी मुलाक़ात में तब्लीग़ करते थे और अहमदियत का पैग़ाम देते थे। कहते हैं उस वक़्त तक उनके ज़ाती ताल्लुक़ की वजह से अख़लाक़ की वजह से ज़मीन तैयार हो चुकी होती थी और फिर लोग फ़ौरी तौर पर बैअत भी कर लेते थे।

बहरहाल उन्होंने स्पेन में काफ़ी काम किया है और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वहां उन्होंने जमाअत भी क़ायम कर दी। एक जुनून था उनको अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने का और यह बिल्कुल सच्च है कि इस के साथ आजिज़ी भी उनकी इंतिहा की थी। स्पेन जाने का जब मैंने उनको कहा है तो बग़ैर किसी उज़्र के तैयार हो गए और बावजूद उस के कि बीमार थे।

अल्लाह तआला जमाअत को ऐसे वफ़ादार मुबल्लिग मुरब्बी अता फ़रमाता रहे जो बेनफ़्स हो कर काम करने वाले हों। काम को पूरा करने वाले हों।अल्लाह तआला उनके दर्जात भी बुलंद फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा इक़बाल अहमद मुनीर साहिब मुरब्बी सिलसिला का है चौधरी मुनीर अहमद साहिब के बेटे हैं। यह पाकिस्तान में थे। पिछले दिनों उनकी भी वफ़ात हुई है। उनके ख़ानदान में भी अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा चौधरी ग़ुलाम हैदर साहिब के द्वारा 1895 ई. में हुआ था। उन्होंने 1983 ई. में जामिआ से तालीम मुकम्मल की। फिर इस्लाह-ओ-इरशाद मर्कज़िया के तहत काम किया। फिर 2001 ई. से 2008 ई. तक सीरालियून में रहे फिर वापिस आ गए। इस के बाद फिर पाकिस्तान के मुख़्तलिफ़ ज़िलों में काम करते रहे। दिल के मरीज़ भी थे लेकिन इस के बावजूद बड़ी मेहनत से काम करने वाले थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। निहायत मेहनत और तवज्जा से ख़िदमत बजा लाने वाले थे और लोगों से बड़ा अच्छा ताल्लुक़ और मुख़लिस तबीयत के मालिक थे। मरहूम की पत्नी और तीन बेटे हैं।

मुरब्बी सिलसिला अब्दुल वकील साहिब कहते हैं कि बड़ी हरदिल अज़ीज़ शख़्सियत थे और ख़िलाफ़त से बड़ा ताल्लुक़ था। बड़े मुहब्बत करने वाले थे। रोब वाले शख़्सियत के मालिक थे लेकिन दिल के बहुत ही शफ़ीक़ भी थे। थोड़ी सी मुलाक़ात के बाद अंदाज़ा हो जाता था कि इन्कसारी उनमें कमाल की है।

सय्यद मुनीर अहमद साहिब नायब अमीर कराची जिनके साथ उन्होंने काम किया कहते हैं कि निहायत मेहनती और मुख़लिस शख़्सियत के मालिक थे। जो काम भी दिया जाता फ़ौरी तौर पर उसको पहली तर्जीह में करते। बाक़ायदा दफ़्तर आ के अपने बड़े मश्वरे भी देते। कहते हैं मुझे भी उनसे हौसला होता रहता था। दिल के बहुत साफ़ थे। हलक़े के लोगों से ज़ाती ताल्लुक़ था जिसकी वजह से उनके कामों में बहुत आसानीयां पैदा हो जाती थीं और इसी वजह से फिर चंदों की तरफ़ तवज्जा दिलाने में भी उनको ही कहा जाता था और फिर उनके यह कहने का ख़ातिर-ख़्वाह असर भी होता था। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे।

तीसरा वर्णन सय्यदा नुसरत जहां बेगम साहिबा पत्नी मियां अब्दुल अज़ीम साहिब दरवेश मरहूम कादियान का है। पिछले दिनों उनकी भी वफ़ात हुई है। काफ़ी अर्से से साहब-ए-फ़िराश थीं। ज़माना दरवेशी में सूबा उड़ीसा से शादी हो के आने वाली पहली ख़ातून थीं। मरहूमा ने अपने ख़ावंद के साथ दरवेशी का दौर सब्र और शुक्र से गुज़ारा। सौम-ओ-सलात की निहायत पाबंद, दुआगो, नेक और मुख़लिस ख़ातून थीं। बाक़ायदा तिलावत करने वाली और क़ुरआन-ए-करीम दूसरों को पढ़ाने वाली थीं। बहुत से बच्चों और औरतों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ना सिखाया। दरवेशी के दौर में जब आमदनी कम थी तो अपने गुज़ारे के लिए मुर्ग़ियां पाल लेती थीं बजाय इसके कि दूसरों पर नज़र रखें। ख़िदमत-ए-ख़लक़ का जज़बा नुमायां था। कादियान में औरतों की तजहीज़-ओ-तकफ़ीन के मौक़े पर यह बड़ी ख़िदमत किया करती थीं। ग़ुसल इत्यादि देने में भी मदद करतीं। ख़लीफ़-ए-वक़्त से विशेष ताल्लुक़ था। प्रत्येक तहरीक में हिस्सा लेती थीं। मरहूमा मूसिया भी थीं। उनके पीछे रहने वालों में चार बेटे और एक बेटी हैं। ख़ुरशीद अनवर साहिब की दूसरी वालिदा थीं। दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब मरहूम मुर्ख़ अहमदियत की यह चाची थीं।

अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। नमाज़ के बाद में उनकी नमाज़ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा।

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में अमन क़ायम करने के ज़िमन में क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् हज आयत 40 और 41 मे आलमी मज़हबी आज़ादी क़ायम करने का अज़ीमुश्शान और बुनियादी उसूल वर्णन किया गया है। इन आयात करीमा में अल्लाह फ़रमाता है कि "क़िताल की इजाज़त सिर्फ उन लोगों को दी जाती है जिन के ख़िलाफ़ जंग की गई है क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए और निसंदेह अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। वे लोग जिन्हें उनके घरों से व्यर्थ मे निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है।"

फिर फ़रमाता है "और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों का दिफ़ा उनमें से बाअज़ को बाअज़ दूसरों से भिड़ा कर न किया जाता तो राहिब ख़ाने मुनहदिम कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के मुआबिद भी और मसाजिद भी जिनमें बकसरत अल्लाह का नाम लिया जाता है और निसंदेह अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उसकी मदद करता है। निसंदेह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और) कामिल ग़लबा वाला है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन दोनों आयात करीमा में जहां अल्लाह तआला ने पैग़ंबर इस्लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिफ़ाई जंग की इजाज़त दी है वहां यह भी वाज़ेह तौर पर निश्चित कर दिया कि यह इजाज़त इसलिए दी गई है कि ज़ुलम करने वाले ने दुनिया से मज़हबी आज़ादी ख़त्म करने की कोशिश की है। जंग की इजाज़त सिर्फ मुस्लमानों और उनकी मसाजिद की हिफ़ाज़त के लिए या दीन को फैलाने के लिए नहीं दी गई बल्कि क़ुरआन-ए-करीम निश्चित तौर पर फ़रमाता है कि अगर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने वालों को ताक़त से रोका नहीं जाता तो कोई गिरजा, राहिब ख़ाना, मंदिर, मस्जिद और कोई माबद महफ़ूज़ नहीं रहता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ही वह वाहिद अल्लाह का कलाम है जो न केवल समस्त मज़ाहिब-ओ-अक़ायद के पैरोकारों को मुकम्मल मज़हबी आज़ादी फ़राहम करता है बल्कि एक क़दम आगे बढ़कर समस्त मुस्लमानों को और समस्त ऐसे लोगों जो कि मस्जिद आते हैं उनको ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त का हुक्म देता है। ये वह अल्लाह का कलाम है जो कि समस्त मज़ाहिब, अदयान और अक़ायद की हिफ़ाज़त और दिफ़ा करता है। यह वह ख़ालिस और प्रत्येक के हुक़ूक़ समोने वाली इस्लामी तालीमात हैं जो हम समस्त दुनिया तक फैलाने की कोशिश कर हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जहां तक इस मस्जिद का ताल्लुक़ है तो आप सोचते होंगे कि हमने ज़ायन में मस्जिद निर्माण करने का फ़ैसला क्यों किया? निसंदेह इसका बुनियादी उद्देश्य तो वही है जो मैं वर्णन कर चुका हूँ। दूसरा यह कि जो लोग इस शहर की तारीख़ से वाक़फ़ीयत रखते हैं उनको इलम होगा कि ज़ायन शहर की बुनियाद एक Evangelist ईसाई मिस्टर इलैगज़ेंडर डोई ने रखी, जिसने ख़ुदा की तरफ़ से मामूर होने का दावे किया था। मिस्टर डोई इस्लाम की सख़्त मुख़ालिफ़त और मुस्लमानों से नफ़रत का इज़हार करता था। यह मुख़ालिफ़त जमाअत अहमदिया के इलम में आई और आप अलैहिस्सलाम ने उसको सीधे चैलेंज दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आप में से कुछ ये सवाल उठाएँगे कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने मस्टर्ड डोई को संबोधित करते हुए सख़्त लहजा क्यों अपनाया और यह किस तरह आपकी प्यार-ओ-मुहब्बत की तालीम से समानता है?

दरअसल हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुरअमन तालीमात और डोई को जवाब देने में बाहमी कोई विरोधाभास नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी एक अवसर पर भी फ़साद और कट्टरवाद की शिक्षा की हिदायत नहीं की। वास्तव मे जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मस्टर्ड डोई की इस्लाम और बानी इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ ईश - निंदा का इलम हुआ तो आप अलैहिस्सलाम ने बाहमी एहतेराम को मलहूज़ रखते हुए उसे दलील से क़ायल करने की कोशिश की कि वे तहम्मुल का मुज़ाहरा करे और मुस्लमानों के जज़बात का ख़्याल करे। इस के बरख़िलाफ़ मस्टर्ड डोई इस्लाम के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और खुल कर इस्लाम के नाबूद करने की ख़ाहिश की। उदाहरणतः लिखता है कि "मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए इस्लाम दुनिया से नाबूद हो जाए। हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर। हे ख़ुदा! इस्लाम को हलाक कर दे।"

फिर अपनी तहरीरात मैं मिस्टर डोई ने बड़े घमंड में इस को ईसाईयत और इस्लाम के मध्य अज़ीम जंग क़रार दिया। उसने लिखा कि अगर मुस्लमान ईसाईयत क़बूल न करें तो वह हलाकत-ओ-तबाही में मुबतला होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उन इंतिहाई बयानात और ईश - निंदा के जवाब में जमाअत अहमदिया के संस्थापक अलैहिस्सलाम ने इस बात को यक़ीनी बनाया कि हज़ारों बल्कि लाखों मासूम लोगों इस तकलीफ़ से बच जाएं जिस में वे मिस्टर डोई की ईसाईयों और मुस्लमानों के मध्य मज़हबी जंगों की ख़ाहिश पूरी होने के नतीजा में पड़ सकते थे। इसलिए आप अलैहिस्सलाम ने मिस्टर डोई को मुबाहला का चैलेंज दिया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुस्लमानों की हलाकत और तबाही की दुआ करने की बजाय मिस्टर डोई यह दुआ करें कि हम दोनों में से जो झूठा है वह दूसरे की ज़िंदगी में मर जाए। यह दरअसल एक हमदर्दाना फ़ेअल और हालात को बेहतर करने का माध्यम था। बजाय ईस के कि समस्त मुस्लमानों और ईसाईयों को एक दूसरे के मुक़ाबिल पर खड़ा कर दिया जाए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात पर-ज़ोर दिया कि आप और मिस्टर डोई दुआ का सहारा लें और मामला अल्लाह तआला के हाथ में दें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह सच्चाई जानने का एक मुनासिब और पुरअमन माध्यम था। अगर यह कहा जाए कि यह अदावत और इश्तिआल अंगेज़ी के मुक़ाबला पर सब्र का कामिल उदाहरण था तो इस में कोई मुबालग़ा नहीं होगा। इस चैलेंज के बाद मिस्टर डोई ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ इंतेहाई नाज़ेबा तरीक़ इख़्तेयार किया। इसलिए रिपोर्ट हुआ है कि मिस्टर डोई ने कहा कि "हिन्दुस्तान में एक मुहम्मदी मसीह है जो मुझे बार-बार लिखता है .. तुम ख़्याल करते हो कि मैं इन मच्छरों और मक्खीयों का जवाब दूँगा अगर में उन पर अपना पांव रखूँ तो मैं उनको कुचल कर मार डालूँगा।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फिर अपना चैलेंज दोहराया और अमरीका और अन्य इलाक़ों में इस की ख़ूब तशहीर हुई। सहाफ़ी हज़रात मिस्टर डोई की ताक़त और आला मुक़ाम को वर्णन करते और इस का मुवाज़ना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इस तरह करते हैं कि इंडिया के एक दौर उफ़्तादा गांव से ताल्लुक़ रखने वाला शख़्स जिसकी दौलत और दुनियावी रसूख़ का मिस्टर डोई से कोई मुक़ाबला ही नहीं। फिर जस्मानी तौर पर भी मिस्टर डोई हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से उम्र में छोटा और सेहत में बेहतर था। इस समस्त ज़ाहिरी फ़र्क़ के बावजूद हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कभी भी अपना चैलेंज वापस लेने का नहीं सोचा और इस हवाला से ज़रा भी हिचकिचाहट का इज़हार नहीं किया और समस्त दुनिया वह बेसरो सामानी के बावजूद जल्द ही नतायज आप अलैहिस्सलाम के हक़ में पलट गए। पै दर पै ऐसे वाक़ियात हुए कि डोई की हिमायत जाती रही और उस की दौलत, जस्मानी और ज़हनी सलाहीयतें ख़त्म हो गईं। अंततः वह अपने अंजाम को पहुंचा। जिसको

यू ऐस मीडीया ने अफ़सोसनाक अंजाम क़रार दिया। निसंदेह उस वक़्त का यू ऐस मीडीया ख़राज-ए-तहिसीन के लायक़ है जिसने ईमानदारी से इस की रिपोर्टिंग की। उदाहरणतः एक मशहूर Boston Herald अख़बार ने यह शीर्षक दिया कि "Great is Mirza Ghulam Ahmad – the Messiah"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मुख़्तसर यह कि जमाअत अहमदिया के संस्थापक ने कभी भी अपने ख़्यालात और इक़तेदार को किसी पर नाफ़िज़ करने की कोशिश नहीं की, न ही मिस्टर डोई या किसी भी मुख़ालिफ़ इस्लाम की नफ़रत को ताक़त के साथ या ज़बरदस्ती रोकने का सोचा। अहमदी मुस्लमानों के लिए बानी जमाअत की सदाक़त का एक निशान है, इस तनाज़ुर में ज़ायन का शहर हमारी तारीख़ में एक ख़ास एहमीयत रखता है। वक़्त की कमी के बायस मैं मज़ीद तफ़सील में नहीं जा सकता। जबकि मस्जिद में इस मुबाहला के हवाला से ख़ुसूसी नुमाइश का एहतेमाम किया गया है, अगर आप इस हवाले से मज़ीद जानना चाहते हैं तो आप जाने से क़बल इस नुमाइश से इस्तिफ़ादा कर सकते हैं। या मुम्किन है कि आप पहले ही नुमाइश देख चुके हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अतः में यह कहना चाहता हूँ कि आज हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद-ओ-महदी माहूद के पैरोकार अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि हम मस्जिद फ़तह अज़ीम का हक़ीक़ी मज़हबी आज़ादी के निशान के तौर पर उद्घाटन कर रहे हैं। इस के दरवाज़े इस सुनहरे पैग़ाम के साथ खोले जा रहे हैं कि समस्त लोगों और कम्यूनिटीज़ के मज़हबी हुक़ूक़ और पुरअमन अक़ायद का हमेशा ख़्याल रखा जाएगा और उनका तहफ़्फ़ुज़ किया जाएगा। यह जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का अव्वलीन उद्देश्य है कि बनीनौ इन्सान को रुहानी निजात की राह पर चलाया जाए और इस बात को यक़ीनी बनाया जाए कि समस्त लोगों रंग-ओ-नसल की तफ़रीक़ से क़त-ए-नज़र बाहमी प्यार और हम-आहंगी और हक़ीक़ी अमन और तहफ़्फ़ुज़ रहें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरी दिली-ख़्वाहिश है और मैं दुआ करता हूँ कि यह मस्जिद इन शा अल्लाह अमन, तहम्मुल और समस्त बनीनौ इन्सान से मुहब्बत का स्रोत होगी। मेरी दुआ है कि यहां इबादत करने वाले समस्त आजिज़ी के साथ अपने ख़ालिक़ को पहचानें, उसी के आगे झुकें और बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करें। हमारा यक़ीन है कि हम इसी सूरत मे कामयाब-ओ-कामरान हो सकते हैं कि जब हम अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने और बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करने वाले होंगे। इन शब्दों के साथ मैं आप सब का एक मर्तबा फिर शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप आज शाम इस प्रोग्राम में शामिल हुए हैं। अल्लाह तआला आप सब पर अपना फ़ज़ल फ़रमाए। आमीन

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने मेयर का शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने शहर की चाबी पेश की। तथा फ़रमाया मुझे यक़ीन है कि अब यह चाबी महफ़ूज़ हाथों में है।

हुज़ूर अनवर का यह ख़िताब 7 बजकर 23 मिनट तक जारी रहा आख़िर पर हुज़ूर ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के इख़तेताम पर मेहमानों ने देर तक तालियाँ बजाईं। इसके बाद डिनर का प्रोग्राम हुआ। खाने के बाद भी कुछ मेहमानों के साथ हुज़ूर अनवर ने गुफ़्तगु फ़रमाई। इसके बाद हुज़ूर अनवर महिलाओं की मारकी मे तशरीफ़ ले गए जहां महिलाएं मौजूद थीं 8 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर ने नमाज़ मग़रिब-ओ-इशा जमा करके पढ़ाई। इसके बाद हुज़ूर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

यक्म अक्तूबर 2022 ई. (शनिवार का दिन) शेष भाग

मेहमानों के तास्सुरात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने मेहमानों पर गहिरा असर छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने अपने तास्सुरात का इज़हार किया :

★ Illinois के कांग्रेस मैन राजा कृष्णा मूर्ती साहिब ने अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहा "क्या ही ख़ूबसूरत दिन है और क्या ही ख़ूबसूरत प्रोग्राम है। हुज़ूर ने अपनी आमद से हमें शरफ़ बख़्शा। मस्जिद फ़तह अज़ीम लोगों के जमा होने के लिए, इबादत करने के लिए बाहमी ताल्लुक़ात बढ़ाने के लिए और इस्लाम के बारे में आगाही हासिल करने के लिए बहुत ही उम्दा होगी।

★ एक और मेहमान Cheri Neal साहिब जो कि ज़ायन टाउन शिप की सुपरवाइज़र हैं वर्णन करती हैं कि मैं समस्त इंतेज़ामत से बहुत हैरान हूँ। मुझे बहुत ख़ुशी है कि आप अपने इस उद्देश्य में कामयाब हुए हैं जिस के लिए एक अरसा मेहनत की है। मैं यहां आकर बहुत ख़ुश हूँ।

★ John D Eidelberg लेक काओनटी के शेरिफ वर्णन करते हैं कि यहां आकर हुज़ूर को देखना, उनसे मिलना, उनसे बात करना और विभिन्न रहनुमाओं को सुनना मेरे लिए ख़ुशी का बायस है। यहां आना मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र है। मैं आपका मशकूर हूँ कि आपने मुझे अपनी जमाअत के साथ ख़ूबसूरत लमहात गुज़ारने का अवसर दिया। हुज़ूर ने बाहमी ताल्लुक़ात और आपस में काम करने के बारे में बात की मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपकी तक़रीर सुनना मेरे लिए काबिल फ़ख़र था। आपकी तक़रीर ख़्यालात को रोशन करने वाली थी।

★ एक और मेहमान Craig Constantine साहिब जो कि राईस यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर हैं वर्णन करते हैं कि आपका पैग़ाम "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं" बाहमी एहतेराम, तहम्मुल, इज़्ज़त नफ़स का ख़्याल रखना, ये सब बुनियादी चीज़ें हैं और हमारे दिल से आती हैं और इस से दिल-ओ-दिमाग़ की रुहानी बेदारी होती है।

★ ज़ायन के साबिक़ा कमिशनर Amos Monk साहिब वर्णन करते हैं कि मेरे ख़्याल में आपकी तालीमात हर चीज़ का अहाता किए हुए हैं और दुनिया को इस से ज़्यादा आगाही होनी चाहिए। मेरे ख़्याल में यह आजकल की दुनिया का ख़ूबसूरत तरीन राज़ है। मैं अपने सामने मेज़ पर पड़े हुए ब्रोशर देख सकता हूँ जिस पर अदल-ओ-इन्साफ़, ख़ुलूस और मुहब्बत का पैग़ाम है। यही तो वह चीज़ें हैं जिसकी दुनिया को ज़रूरत है। नफ़रत ख़त्म कर दें तो दुनिया जन्नत नज़ीर हो जाएगी। मेरे ख़्याल में यह पैग़ाम समस्त दुनिया को सुनना चाहिए। दुनिया के मसायल का यही है।

★ ज़ाईन शहर के मेयर Billy Mckinney साहिब जिन्हों ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में ज़ायन शहर की चाबी पेश की अपने तास्सुरात का इज़हार करते हुए कहते हैं कि मैं यहां 1962 ई. से मुक़ीम हूँ। जैसा कि आप सब जानते हैं कि यह प्रोग्राम ज़ायन शहर और जमाअत अहमदिया के लिए एक तारीख़ी प्रोग्राम है। हुज़ूर से मिलकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई। पहली मर्तबा ऐसा हुआ है कि किसी से मिलकर मुझे चुप लग गई हो। मुझे समझ नहीं आरही थी कि क्या कहूं। आपकी मौजूदगी का एहसास बहुत उम्दा है। जमाअत अहमदिया ने इस कम्यूनिटी में बहुत ख़िदमात सरअंजाम दी हैं। आइन्दा भी हम उम्मीद करते हैं। बाहमी ताल्लुक़ात को बढ़ाते हुए मिलकर काम करते रहेंगे। शहर के ठीक बीच में मस्जिद का होना भी एक उम्दा एहसास है।

★ Rabi Melinda Solma साहिब जो कि न्यूयार्क के Tanenbaum Center of Inter-Religious Understanding से ताल्लुक़ रखते हैं वर्णन करते हैं कि जमाअत अहमदिया से हमेशा की तरह बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ। आपके ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत उम्दा और सबको साथ लेकर चलने वाला है। इन तालीमात का अमली नमूना दिखाना, सब के लिए दरवाज़े खुले रखना, अमन के क़ियाम के लिए काम करना, प्रत्येक का बतौर इन्सान सम्मान करना यह बहुत ही आला तालीम है।

★ लोकल आरकेटेकट Kelvin Cox साहिब जिन्हों ने मस्जिद का नक़्शा, डिज़ाइन और तामीर में काम किया है कहते हैं यह बहुत ही उम्दा इमारत है और यहां पर हुज़ूर की मौजूदगी, यह एहसास में शब्दों में वर्णन नहीं कर सकता। हुज़ूर ने जो ख़ुदा तआला का पैग़ाम दिया कि दुनिया और सयासी उमूर से कोई ताल्लुक़ नहीं, सिर्फ अमन और प्यार का पैग़ाम पहुंचाना है, यह बहुत उम्दा पैग़ाम था और यही है जिसकी दुनिया को आज ज़रूरत है।

★ इस प्रोग्राम में एक मेहमान ऐसे भी शामिल थे जिन्हों ने ज़ायन मस्जिद की संग-ए-बुनियाद के अवसर पर एक ईंट रखने की सआदत पाई थी उन्होंने अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहा कि आज एक ख़ूबसूरत दिन था। मैं सुबह बेदार हुआ जैसे कि आज का दिन बहुत ख़ास है। मुझे पिछले साल इस मस्जिद की संग-ए-बुनियाद रखने की तौफ़ीक़ मिली। मैं बहुत ख़ुश था कि कब उसे मुकम्मल होता देखूँगा और हुज़ूर से मिल सकूँगा। हम बहुत ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हुज़ूर यहां तशरीफ़ लाए। आपकी मस्जिद हमारी कम्यूनिटी के लिए उम्मीद और दोस्ती का मार्ग है।

शेष आगे ..

★ ★ ★

सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना सनिध्य अता करे
अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझ से मांग रहा हूँ वह तुम ही हो, मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए, मुझे तेरा क़ुरब चाहिए।
अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस वादे के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे।
और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपने लोगों में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनाओ

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न : इस प्रश्न पर कि रोज़े के दौरान यदि किसी महिलाएं के माहवारी के दिन शुरू हो जाएं तो उसे रोज़ा खोल लेना चाहिए या उस रोज़ा को मुकम्मल कर लेना चाहिए। तथा जब ये दिन ख़त्म हों तो सेहरी के बाद पाक साफ़ हो सकते हैं या सेहरी से पहले पाक होना आवश्यक है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 30 अप्रैल 2020 मे इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर: महिलाएं की इस फ़ित्रती हालत को क़ुरआन-ए-करीम ने "أَذًى" अर्थात् कष्ट की हालत क़रार दिया है। और इस्लाम ने इस कैफ़ीयत में महिलाएं को प्रत्येक किस्म की इबादात के बजा लाने से रुख़स्त दी है। इसलिए जिस वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएं उसी वक़्त रोज़ा ख़त्म हो जाता है और उन दिनों के पूरी तरह ख़त्म होने पर और मुकम्मल तौर पर पाक होने के बाद ही रोज़े रखे जा सकते हैं। तथा जो रोज़े इन दिनों में (आरंभ और अंत वाले दिन के साथ छूट जाएं,) इन रोज़ों को रमज़ान के बाद किसी वक़्त भी पूरा किया जा सकता है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के नाम अपने पत्र में हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी एक हदीस कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे एक ख़ज़ाना की ख़ातिर तीन व्यक्ति क़िताल करेंगे (और मारे जाऐंगे) तीनों ख़लीफों (हुकमरान) के बेटे होंगे लेकिन वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को भी नहीं मिलेगा। फिर पूर्व की जानिब से स्याह झंडे नमूदार होंगे वे तुम्हें ऐसा क़तल करेंगे कि इस से क़बल किसी ने ऐसा क़तल न किया होगा। इस के बाद अपने कुछ और बातें भी वर्णन फ़रमाएं जो मुझे याद नहीं, फिर फ़रमाया जब तुम इन (मह्दी) को देखो तो उनकी बैअत करो जबकि तुम्हें बर्फ़ पर घुटनों के बल घिसट कर जाना पड़े। क्योंकि वह ख़लीफ़तुल महदी हैं।" दर्ज करके इस के एक हिस्सा की व्याख्या कर के बारे में हुज़ूर की राय दरयाफ़त की। तथा हदीस के एक हिस्सा के बारे में मज़ीद वज़ाहत चाही। हुज़ूर अनवरअय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मई 2020 मे इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप ने इस हदीस का हवाला बहर-ए-ज़रख़ार से दर्ज किया है जबकि यह हदीस सहा सित्ता में से सुंन इब्ने माजा किताब फ़ितन बाब ख़ुरूज महदी में भी रिवायत हुई है। हदीस में वर्णन कंज़ और ख़लीफों के बेटों के बारे में आपकी वर्णन करदा व्याख्या एक ज़ौक़ी व्याख्या है।

मेरे ख़्याल में इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मत-ए-मुस्लिमा में आगे ज़माने में नमूदार होने वाले विभिन्न वाक़ियात की ख़बरदी है। जिनमें कुछ वाक़ियात दुनियावी उमूर से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ अध्यात्मिक उमूर के सम्बन्ध में हैं। खज़ाने से मुराद जबकि बहुत से उल्मा ने ख़ाना काअबा का ख़ज़ाना मुराद लिया है, परन्तु वे ख़ज़ाना तो बहुत से हुकमरानों के हाथ लगे भी हैं। इसलिए हदीस में मज़कूर ख़ज़ाना से मुराद ख़ाना काअबा का ख़ज़ाना मुराद नहीं हो सकता क्योंकि हदीस मे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे हैं कि वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को नहीं मिलेगा। इस लिए इस से मुराद वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना है जिस की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाद ख़िलाफ़त अला मिनहाज अल् नबूव्वत के इजरा की सूरः में बशारत अता फ़रमाई थी। और चूँकि इस खज़ाने को पाने के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने सबसे प्रथम शर्त ईमान और अमल-ए-सालेह क़रार दी है, जो इन दुनियावी हुकमरानों में मफ़क़ूद हो चुकी थी, इसलिए उन्होंने इसके हुसूल के लिए क़िताल अर्थात् जंगें तो बहुत कीं लेकिन किसी के हाथ वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना न आया।

इसी लिए इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खज़ाने के लिए क़िताल करने वालों के लिए केवल "इब्ने ख़लीफ़" के शब्द प्रयोग फ़रमाए हैं। अर्थात् वह ख़लीफ़ा बमानी जांनशीन होंगे लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ायम करदा ख़लीफ़ा या नुबुव्वत की बिना पर मिलने वाली ख़िलाफ़त के ताबे ख़लीफ़ा नहीं होंगे। जबकि इसी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस व्यक्ति के लिए जिसे यह ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबूव्वत का अध्यात्मिक ख़ज़ाना मिलना था "ख़लीफ़तुल महदी" के शब्दों प्रयोग फ़रमाए हैं।

इस हदीस में मुसलमानों के क़तल-ओ-ग़ारत का जो वर्णन है, आप ने उस के बारे में अपना ख़्याल ज़ाहिर किया है कि वह मह्दी के माध्यम से होगा जो मेरे नज़दीक दरुस्त नहीं है। यदि इस से मुराद ज़ाहिरी क़तल ओ ग़ारत और ख़ूँरेज़ी ली जाए तो यह मह्दी के माध्यम से कदापि नहीं हो सकती बल्कि इस से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दूसरी हदीस (वर्णनित मिशकात मसाबीह" मे 'مُلْكًا عَاضًّا और مُلْكًا جَبْرِيَّةً के शब्दों में वर्णन भविष्यवाणी के अनुसार, इन प्रत्येक दो अदवार में मुसलमानों की आपस की जंगों में होने वाली ख़ूँरेज़ी और हत्या और खून खराबा है। तथा तेरहवीं सदी में मंगोलों के हाथों होने वाली मुसलमानों की क़तल-ओ-ग़ारत मुराद है।

ख़लीफ़ातुलल्लाह अल् महदी के माध्यम से इस क़तल-ओ-ग़ारत के वक़ूअ पज़ीर न होने की एक दलील यह भी कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले मह्दी की एक निशानी "يَضَعُ الْحَرْب" अर्थात् वो जंग-ओ-जदाल और किशत-ओ-ख़ून का ख़ातमा कर देगा। (सही बुख़ारी किताब अंबिया बाब नुज़ूल ईसा) वर्णन फ़रमाई है। अतः यह कैसे हो सकता है कि एक तरफ़ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आने वाले मह्दी को अमन-ओ-शांति का अलमबरदार क़रार दे रहे हों और दूसरी तरफ़ इसी के माध्यम से उम्मत-ए-मुहम्मदिया के लोगों की ऐसी ख़ूँरेज़ी की सूचना दे रहे हों जैसी ख़ूँरेज़ी पहले ज़मानों में कभी किसी ने न की हो?

फिर उस हदीस में रावी का यह वर्णन कि "इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ और बातें भी फरमाईं जो मुझे याद नहीं।" विशेष तवज्जा का मुतहम्मिल है। और बहुत संभव है कि वे उमूर दज्जाल के ज़हूर के बारे में हों क्योंकि असंख्य ऐसी रिवायात कुतुब अहादीस में मौजूद हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दज्जाल के फ़ित्ना को सबसे बड़ा फ़ित्ना क़रार दिया और उसके मुक़ाबले के लिए अपनी उम्मत को मसीह मौऊद की आमद की ख़ुशख़बरी अता फ़रमाई। रावी के अनुसार इन बातों के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम मह्दी अलैहिस्सलाम की आमद का वर्णन फ़रमाया और उनकी बैअत को लाज़िमी क़रार देते हुए ताकीदन फ़रमाया कि यदि तुम्हें बर्फ़ की सिलों से घुटनों के बल घिसट कर भी जाना पड़े तो अवश्य उसकी बैअत करना, क्योंकि वह ख़लीफ़ातुलल्लाह अल् महदी है।

अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में तीन अलग अलग ज़मानों का वर्णन फ़रमाया है। एक वह ज़माना जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का मुबारक दौर हसब-ए-मंशा इलाही अंत पज़ीर हो जाएगा। और इसके बाद मुसलमान आपस में जंग-ओ-जदाल करेंगे और अपने ही लोगों को तलवार के नीचे करके उनका ख़ून बहाएँगे, उस वक़्त वह अध्यात्मिक खज़ाने से वंचित हो जाऐंगे। दूसरा वह ज़माना जब मुसलमानों के दुनियावी लिहाज़ से भी कमज़ोर हो जाने की वजह से उनके ग़ैर मुस्लिम

मुख़ालेफ़ीन उन्हें ख़ूँरेज़ी का निशाना बनाएंगे और फिर तीसरा वह जब आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारतों के अनुसार इमाम महदी और मसीह मुहम्मदी की बिअसत होगी और उम्मत-ए-मुहम्मदिया का वह हिस्सा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ग़ुलाम सादिक़ और अध्यात्मिक फ़र्ज़ंद की बैअत करके उसकी आग़ोश में आ जाएगा, उस के लिए एक मर्तबा फिर उसी तरो ताज़गी का ज़माना आएगा जिसका मुशाहिदा उम्मत मुहम्मदिया ने अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अह्द मुबारक में किया था और उस वक़्त फिर "सहाबा से मिला जब मुझ को पाया" की नवीद इन ख़ुश-नसीबों के लिए पूरी होगी।

हदीस में मुंदरज क़तल-ओ-ग़ारत को यदि रूपक के लिया जाए तो फिर उसके अर्थ ये होंगे कि जिस तरह सही बुख़ारी में "يَضَعَ الْحَرْب" वाली हदीस में मज़कूरा "فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ" का हक़ीक़ी अर्थ सलीब तोड़ना और सिर मारना नहीं। बल्कि इस से मुराद ईसाइयत की तरफ़ से इस्लाम पर होने वाले आरोप का मुंहतोड़ उत्तर देना मुराद है, इसी तरह इमाम महदी के माध्यम से मुसलमानों के क़तल से मुराद उन में राह पा जाने वाले ग़लत अक़ायद का क़िला क़मा करना और दीन की तजदीद कर उसे आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात के ऐन अनुसार दुनिया में रायज करना होगा।

अतः मेरे ख़्याल में यदि इस हदीस को इस तरह लिया जाए तो ज़्यादा बेहतर व्याख्या बनती है और क़तल की भी वज़ाहत हो जाती है।

प्रश्न : एक अरब मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि क्या जमाअत अहमदिया अबाज़िया फ़िर्क़ा की हदीस की किताब "मस्नद अल् रबीअ बिन हबीब" में वर्णन अहादीस को सही समझती और उन पर अमल करती है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मई 2020 मे इस इस्तफ़सार पर निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

लाम अहादीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जमाअत अहमदिया का अक़ीदा सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में यह है कि क़ुरआन-ए-करीम और सुन्नत के बाद तीसरा माध्यम से हिदायत का हदीस है और वे क़ुरआन की ख़ादिम और सुन्नत की ख़ादिम है। लेकिन जो हदीस क़ुरआन और सुन्नत के विपरीत हो और तथा ऐसी हदीस की नक़ीज़ हो जो क़ुरआन के अनुसार है या ऐसी हदीस हो जो सही बुख़ारी के मुख़ालिफ़ है तो वह हदीस क़बूल के लायक़ नहीं होगी। क्योंकि उस के क़बूल करने से क़ुरआन को और उन समस्त अहादीस को जो क़ुरआन के मुवाफ़िक़ हैं रद्द करना पड़ता है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत का यह कर्तव्य होना चाहिए कि यदि कोई हदीस मुआरिज़ और मुख़ालिफ़ क़ुरआन-ओ-सुन्नत न हो तो चाहे कैसे ही अदना दर्जा की हदीस हो इस पर वह अमल करें और इन्सान की बनाई हुई फ़िक़्ह पर उसको प्राथमिकता दें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ की इत्तेबा करें और अहादीस की जो पैग़ंबर ख़ुदा से साबित हैं इत्तिबा करें। ज़ईफ़ से ज़ईफ़ हदीस भी इस शर्त के साथ कि वह क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ालिफ़ न हो हम उसे वाजिबुल अमल समझते हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि कोई सही प्रमाणित हदीस क़ुरआन-ए-करीम से स्पष्ट रूप मे मुख़ालिफ़ हो गो वह बुख़ारी की हो या मुस्लिम की मे कदापि उस की ख़ातिर इस तर्ज़ के अर्थ को जिससे विपरीत क़ुरआन लाज़िम आती है क़बूल नहीं करूँगा।

अतः जो भी हदीस ऊपर वर्णित मयार के अनुसार होगी, चाहे वह किसी भी किताब की हो जमाअत अहमदिया के नज़दीक काबिल-ए-क़बूल और हुज्जत के योग्य है।

प्रश्न : किसी महिला का अपनी मर्ज़ी से अपना बच्चा अपनी जेठानी को देकर, कई वर्ष बाद दोनों ख़ानदानों में मतभेद की सूरः पैदा हो जाने पर माँ की तरफ़ से बचा की वापसी के मुतालिबा के बारे में एक पत्र हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में मौसूल हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 24 जून 2020 ई. में इस बारे में निम्नलिखित हिदायात अता फ़रमाएं। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आम दुनयावी वस्तुओं की लेन-देन में जब इन्सान अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से किसी को अपनी चीज़ दे देता है तो फिर उस चीज़ की वापसी के मुतालिबा को पसंदीदगी की नज़र से नहीं देखा जाता। औलाद जबकि इस किस्म की दुनयावी वस्तुओं में तो शुमार नहीं होती लेकिन फिर भी जब कोई व्यक्ति अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से किसी को अपना बच्चा देदे और दूसरा व्यक्ति उसे अपनी औलाद की तरह रखे तो फिर उसकी वापसी का मुतालिबा भी अख़लाक़न पसंदीदा नहीं इसी लिए जमाअती क़ज़ा ने समस्त हालात का जायज़ा लेकर यही निर्णय दिया है कि हक़ीक़ी माँ का अपने बच्चा की वापसी का मुतालिबा दरुस्त नहीं।

मेरे नज़दीक यदि बच्चा की उमर नौ वर्ष से ज़्यादा है तो अब फ़िक़्ही उसूल ख़यार अल् तमीज़ के तहत इस मुआमले का निर्णय होना चाहिए और बच्चे से पूछना चाहिए कि वह किस के पास रहना चाहता है, जहां बच्चा अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से जाने का इंदीया दे बच्चा को वहीं रखा जाए।

अल्लाह तआला आप दोनों ख़ानदानों को अक़ल और समझाता फ़रमाए, आप ख़ुदा तआला के भय और तक़्वा को मद्द-ए-नज़र रखते हुए केवल उसकी रज़ा की ख़ातिर एक दूसरे के लिए अपने जायज़ हुक़ूक़ छोड़ कर इन झगड़ों को ख़त्म करने वाले हों। आमीन।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ जमाअत अहमदिया घाना के विद्यार्थियों की virtual नशिस्त तिथि 5 दिसंबर2020 ई. में एक तालिब-ए-इलम के इस प्रश्न पर कि जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते उनको समझाने के लिए सबसे मज़बूत दलील कौन सी है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : बात यह है कि जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते वह बात सुनना भी नहीं चाहते। ख़ुदा तआला की ज़ात की मज़बूत दलीलें तो अपना ज़ाती अनुभव है। आप उनको कहें कि तुम कहते हो ख़ुदा नहीं है मैं कहता हूँ ख़ुदा है। मैंने ख़ुदा से मांगा, उसने मुझे दे दिया। आपकी कोई दुआ क़बूल हुई नाँ? अपने कभी दुआ की, आपकी दुआ क़बूल हुई कि नहीं हुई? (तालिब-ए-इलम ने अर्ज़ किया कि जी, जी क़बूल हुई) बस तो जो ख़ुदा को नहीं मानते उनसे कहो कि तुम कहते हो कि ख़ुदा तआला नहीं है। मैं ने तो अल्लाह तआला से मांगा और मुझे अल्लाह तआला ने दिया। मेरा तो अल्लाह तआला की ज़ात में ज़ाती अनुभव है। मैं किस तरह कह दूं कि ख़ुदा तआला नहीं है। हाँ तुम भी यदि कोशिश करोगे तो फिर तुम्हें भी अल्लाह मिल जाएगा। लेकिन ये लोग जो ख़ुदा को नहीं मानते ये लोग बड़े ढीट लोग होते हैं। यहां भी इक्का atheist है जिसका नाम richard dawkins है। वे भी ख़ुदा तआला को नहीं मानता। और उसने ख़ुदा तआला के ख़िलाफ़ किताब भी लिखी है। मैं ने इस को five volume commentary भी भिजवाई और "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" और दूसरी किताबें भी भिजवाईं। और मैंने कहा ये पढ़ो फिर हमसे बात करो, तुम्हें पता लगे कि ख़ुदा क्या है और ख़ुदा का क्या तसव्वुर है। उसने कहा मैंने कुछ नहीं पढ़ना। केवल तुम मेरी किताब पढ़ो, मैं ने तुम्हारी किताबें कोई नहीं पढ़नी। तो ये लोग ढीट होते हैं, और जो ढीट हो जाएं उन्होंने किसी तरह नहीं मानना। हाँ जिनके अंदर थोड़ी सी नेक फ़ितरत होती है उनसे ज़ाती सम्बन्ध रखो और उनको फिर अपने ज़ाती सम्बन्ध की वजह से ख़ुदा तआला के क़रीब ले के आओ। कई दफ़ा जो अपना क़ुरब है वह भी असर डालता है और दूसरे इन्सान के लिए परिवर्तन का बाइस बन जाता है। तो ज़ाती अनुभव जो है वह सबसे मोस्सर चीज़ है। यहां मेरे पास भी कई दफ़ा मुलाक़ातें करने वाले, प्रैस वाले कुछ लोग आते हैं। कुछ ने बाद में इज़हार किया कि हम ख़ुदा को तो नहीं मानते लेकिन यदि कभी ख़ुदा को माना तो हम तुम्हारे ख़लीफ़ा की वजह से मानेंगें किउसने हमें ख़ुदा तआला की सही तरह बात बताई है। फिर दिलों को नरम करने के लिए दुआ होनी चाहिए कि अल्लाह तआला दिलों को नरम भी करे। इसलिए अपना ज़ाती नमूना जो है वह बहुत आवश्यक है वह पेश करें और दुआ की स्वीकृति के लिए अपने अनुभवत वर्णन करें। सब से ज़्यादा तो यह है कि मेरे साथ अल्लाह का क्या सुलूक है। जब अपने साथ अल्लाह का सुलूक बताएँगे तो वह जो first-hand experience है इस से लोग फिर ज़्यादा impressed होते हैं। बाक़ी दलीलें तो बेशुमार हैं। "हमारा ख़ुदा" है "हस्ती बारी तआला के दस दलायल" हैं, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की किताब "हस्ती बारी तआला" है। ये सारी किताबें उर्दू में भी और इंग्लिश में भी आगई हैं। ये पढ़ो और उनको भी ये पढ़ने के लिए दो। इसी तरह यदि कोई पढ़ा लिखा आदमी है और वह पढ़ना जानता है तो इस को एक तो "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" पहले देनी चाहिए, फिर "हस्ती बारी तआला के दस दलायल" हैं वह देनी चाहिए। ये छोटी छोटी किताबें हैं। फिर हज़रत ख़लीफ़ा राबे की किताब revelation rationality है उसका एक chapter जो ख़ुदा तआला की ज़ात पर है वह भी बाज़ों को प्रभावित कर देता है। "हमारा ख़ुदा"

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 04 May 2023 Issue No. 18

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

की भी इंग्लिश ट्रांसलेशन हो चुकी है वह देनी चाहिए कि पढ़ो। अब पढ़ने के बाद भी यदि कोई नहीं मानता तो हमारा काम तो केवल संदेश पहुंचाना है, किसी की हिदायत के लिए हम गारंटी नहीं दे सकते। हिदायत की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने अपने सपुर्द ली है। हमारे सपुर्द केवल तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी डाली है कि हम तब्लीग़ करें और अल्लाह तआला के रस्ता की तरफ़ ले के आएं।

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तालिब-ए-इलम ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा तआला का क़ुरब हासिल करने का सबसे बेहतरीन माध्यम क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह तआला ने बता दिया कि मैंने इन्सान को इबादत के लिए पैदा किया है। وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ और अपनी पैदाइश का जो हक़ है वह अदा करो। पहली बात तो अल्लाह तआला ने फ़रमाई ईमान बिलग़ैब। ईमान बिलग़ैब के बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ. नमाज़ें क़ायम करो। अल्लाह तआला का आदेश है नमाज़ क़ायम करो, तो दूसरी अहम चीज़ इबादत है। अल्लाह तआला पर ईमान लाने के बाद नमाज़ों की अदायगी है। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ में इन्सान जब सज्दे की हालत में होता है उस वक़्त वह अल्लाह तआला के सबसे क़रीब होता है। इसलिए सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना क़ुरब अता करे।

जो तुमसे मांगता हूँ वह दौलत तुम्हें तो हो अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझसे मांग रहा हूँ वह तुम ही हो। मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए। मुझे तेरा क़ुरब चाहिए और जब तेरा क़ुरब मिल जाएगा तो दुनिया की दौलत भी मेरी लौंडी बन जाएगी, मेरी ग़ुलाम बन जाएगी और दुनिया की सहूलतें भी मेरी ग़ुलाम बन जाएँगी। और मेरी रूहानियत भी बढ़ जाएगी। तो फिर सज्दे में दुआ किया करो कि अल्लाह तआला अपना क़ुरब अता करे। ठीक।

प्रश्न : इसी virtual नशिस्त तिथि 5 दिसंबर 2020 ई. में एक और तालिब-ए-इलम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि नमाज़ में लज़्ज़त कैसे हासिल कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : लज़्ज़त कैसे हासिल कर सकते हैं? इस का एक सादा सा तरीक़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बताया है कि तुम रोनी शक्ल बनालो। जब इन्सान ज़ाहिरी तौर पर अपनी शक्ल बनाता है तो जैसी हालत तारी करने की कोशिश करता है दिल की भावनाएं भी फिर वैसे होने शुरू होजाते हैं। जब सूरः फ़ातेहा पढ़ रहे हो तो إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ को बार-बार दोहराओ और ग़ौर करो और रोनी शक्ल बनाते जाओ तो एक वक़्त मैं तुम्हें रोना आजाएगा। जब तुम्हें रोना आएगा, जब दिल पर रिक़्क़त तारी होगी, नरमी पैदा होगी तो फिर तुम्हें इस में एक लज़्ज़त आनी शुरू होगी। फिर जब तुम रुकू में जाओगे, फिर तुम दुआ पढ़ोगे फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। फिर समेअल्ला कहोगे तो फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। सज्दे में जाओगे फिर बेचैनी से तड़पोगे, फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। तो उसी शक्ल को अपने आप पर तारी करना पड़ेगा। एक मुजाहिदा है, एक कोशिश है, वह कोशिश करोगे तो फिर लज़्ज़त पैदा होती जाएगी। और जब एक दफ़ा लज़्ज़त आजाएगी तो फिर तुम्हें मज़ा आता रहेगा। प्रत्येक दफ़ा ही तुम कोशिश करोगे कि मैं नमाज़ में अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हूँ और रोऊँ तो मुझे मज़ा आए, मुझे लुतफ़ आए और जो अल्लाह के आगे सजदा मैं रोने का मज़ा आता है नाँ वह प्रत्येक मज़ा से बहुत बढ़के होता है। ठीक है? और अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस अह्द के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे। और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपने लोगों में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनो। और फिर उनमें से भी वे लोग पैदा हूँ जिनको इबादतों में लज़्ज़त आए।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 3 दिसंबर 2021)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

है।

अतः कोशिश यही करो कि इस्लाम की इशाअत हो , क़ुरआन की इशाअत हो, ताकि हमारी ईद मेंमुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमभी शामिल हूँ। अगर आज की ईद मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी भी ईद है तो फिर सारे मुस्लमानोंकी ईद है लेकिन अगर आज की ईद में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमशामिल नहीं तो फिर आज सारे मुस्लमानोंके लिए ईद नहींबल्कि उन के लिए मातम का दिन है

पस इस नुक्ता को याद रखू । बे-शक एक हद तक हमारी जमात को तब्लीग़ इस्लाम का मौक़ा मिला है मगर हम नहींकह सकते कि ये चीज़ हमारे अंदर इस क़दर घर कर गई है कि हमारी औलादों मेंभी सैंकड़ोंसाल तक चली जाएगी। अभी हमेंये नज़र आता है कि बाअज़लोगोंकी औलाद मेंअगरचे उन पर सैंकड़ों साल नहीं गुज़रे अभी से अपने बाप दादों वाला इख़लास नहीं पाया जाता हालाँकि हमारी असल ईद तभी हो सकती है जब क़ियामत तक मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा खड़ा रखा जाये अगर हमें ये नज़र ना आए और हमारी औलादों मेंइतना जोश ना हो कि हमारे मरने के बाद भी वो मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके नाम और इस्लाम की तालीम को दुनिया मेंफैलाती रहेंगी तो फिर हमेंडर ही रहना चाहिए कि इस वक़्त अगर आरिज़ी तौर पर हमारे लिए ईद है तो थोड़े ही अरसा के बाद कहींख़ुदा-न-ख़्वास्ता हमारे लिए मातम ना हो जाएगी। पस में दोस्तोंको नसीहत करता हूँ कि वो अपनी और अपने अहल-ओ-अयाल की ऐसी इस्लाहकरेंकि उनको यक़ीन हो जाएगी कि वो क़ियामत तक इस्लाम का झंडा खड़ा रखेंगे। और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमकी तालीम को दुनिया मेंफैलाईंगे ताकि हमारी ज़िंदगी ही ईद वाली ना हो बल्कि हमारी मौत भी ईद वाली हो। (ख़ुत्बा-ए-ईद 2 मई 1957 ख़ुत्बात महमूद भाग अव्वल पृष्ठ 489)

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING

OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AllCCE-0289/Raj

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें,
इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन
ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad